दिसम्बर २००१ Rs. 10/-

चन्दामामा

विशेष आकर्षण

सम्पुट - १०५ दिसम्बर - २००१ सञ्चिका - १२

भारत की गाथा

४७

साधु की पहेलियाँ

१९

यक्ष पर्वत

११

सियार का न्याय

३६

अन्तरङ्गम्

SUBSCRIPTION

For USA and Canada
Single copy $2
Annual subscription $20
Remittances in favour of Chandmama India Ltd.
to
Subscription Division
CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097
E-mail : subscription@chandamama.org

शुल्क

सभी देशों में एयर मेल द्वारा
बारह अंक ९०० रुपये
भारत में बुक पोस्ट द्वारा १२० रुपये
अपनी रकम डिमांड ड्राफ्ट या
मनी-ऑर्डर द्वारा
'चंदामामा इंडिया लिमिटेड'
के नाम भेजें।

संस्थापक
बी. नागिरेड्डी और चक्रपाणि

शांति और शुभकामना

नई सहस्राब्दी के प्रथम वर्ष के अंतिम दिनों में युद्ध की चीख-पुकार सुनाई पड रही है। अमेरिका में सितम्बर के काले मंगलवार को जो हुआ और उसके परिणाम स्वरूप अक्तूबर के मनहूस दिनों में जो अफगानिस्तान में घटित हुआ, यह सबको भली-भाँति मालूम है। जब हम प्रेस में जा रहे हैं, सारा विश्व संभावित कीटाणु-आतंकवाद से सामना करने की तैयारी में है, जिससे, यदि यह घटित हुआ, बहुत लोग नहीं बच पायेंगे।

जिस प्रकार दुख की घड़ी में परिवार के सदस्य और मित्र एक साथ मिल जाते हैं, उसी प्रकार संसार के कुछ देशों में अभूतपूर्व प्रकार की अप्रत्याशित आपत्ति ने बहुत से राष्ट्रों को एक दूसरे के निकट ला दिया है। विश्व के नेताओं के मन में जो प्रारंभिक आघात और क्रोध था, उसके स्थान पर अब विश्व व्यापी अग्निकाण्ड की वृद्धि का भय धीरे-धीरे आ रहा है और स्वभावतः पृथ्वी पर से आतंकवाद को समाप्त कर देने का संकल्प भी, जिससे लोग शांति और सामंजस्य के साथ रह सकें।

यह स्मरणीय है कि कोई धर्म मानव के बीच घृणा का उपदेश नहीं देता। प्रत्येक धर्म का केन्द्रीय विचार दूसरों के लिए प्रेम और करुणा है। दूसरी बात यह है कि हम प्राणिमात्र इस पृथ्वी पर किरायेदार की तरह है और यह हमारे लिए लाजिमी है कि हम इसे भावी पीढ़ी के लिए अच्छी दशा में छोड़ें जिससे वे इसका आनन्द ले सकें। इसलिए हमें इस समय विश्व को बेहतर बनाने लिए अपने निजी स्वार्थ से ऊपर उठकर सोचना चाहिए।

आयें, क्रिसमस की भावना का आह्वान करें और प्रत्येक अन्य प्राणी के लिए शांति और सद्भावना के बारे में सोचें।

सम्पादक : *विश्वम*

'हीरोज़ ऑफ इंडिया' प्रश्नोत्तरी में अपनी प्रविष्टि भेजें और आश्चर्यजनक पुरस्कार जीतें।

भारत के नायक - ३

तुम्हें रामायण और महाभारत से प्यार है। है न? इन दो महाकाव्यों के हमारे महान वीरों से संबंधित यहाँ एक प्रश्नोत्तरी दी जा रही है।

तीन सर्वशुद्ध प्रविष्टियों पर पुरस्कार में साइकिलें दी जायेंगी।

1. सूर्य देवता का पुत्र एक ऐसा महान वीर है जो अपने मित्रों के लिए प्राणों की बाजी लगा सकता है। उसकी परोपकारिता जगत प्रसिद्ध है। उसका नाम बताओ।

---

2. गर्भावस्था में ही उसने युद्ध की व्यूह रचना ध्वस्त करने का कौशल सीखा। उस रचना के भीतर एक विशाल सेना से वीरतापूर्वक युद्ध करते हुए वह वीरगति को प्राप्त हुआ। क्या उसका नाम बता सकते हो?

---

3. इस वानर राजकुमार को राम का सन्देशवाहक बनाकर लंका भेजा गया था। यह वीर कौन था?

---

4. इस महान वीर को इच्छा मृत्यु का वरदान प्राप्त था। बाण-शैय्या पर पड़े ये देहत्याग के लिए शुभ मुहूर्त्त की प्रतीक्षा कर रहे थे। कौन थे ये?

---

5. इस महान धनुर्धर ने एक वर्ष के लिए नृत्य-गुरु की भूमिका उस समय निबाही जब वे अपने भाइयों के साथ छद्म वेष में थे। उनका नाम बताने के लिए शायद यह संकेत काफी होगा।

प्रत्येक प्रश्न के नीचे दिये गये स्थान को स्पष्ट अक्षरों में भरें। इन पाँचों में से आपका प्रिय आदर्श वीर कौन है? और क्यों? दस शब्दों में पूरा करें -

मेरा प्रिय महाकाव्य नायक या वीर .... है,

क्योंकि ....

प्रतियोगी का नाम: ....

उम्र: .... कक्षा: ....

पूरा पता: ....

....

पिन: .... फोन: ....

प्रतियोगी के हस्ताक्षर: ....

अभिभावक के हस्ताक्षर: ....

इस पृष्ठ को काटकर निम्नलिखित पते पर ५ जनवरी से पूर्व भेज दें-

हीरोज़ ऑफ इंडिया प्रश्नोत्तरी-३
चन्दामामा इन्डिया लि.
नं.८२, डिफेंस ऑफिसर्स कॉलोनी
ईक्काडुथांगल, चेन्नई-६०० ०९७.

निर्देश :-

१. यह प्रतियोगिता ८ से १४ वर्ष के आयु तक के बच्चों के लिये हैं।
२. सभी भाषाओं के संस्करणों से इस प्रतियोगिता के लिए तीन विजेता चुने जायेंगे। विजेताओं को समुचित आकार की साइकिल दी जायेगी। यदि सर्वशुद्ध प्रविष्टियाँ अधिक हुई तो विजेता का चुनाव 'मेरा प्रिय नायक' के सर्वश्रेष्ठ विवरण पर किया जायेगा।
३. निर्णायकों का निर्णय अंतिम होगा।
४. इस संबंध में कोई पत्राचार नहीं किया जायेगा।
५. विजेताओं को डाक द्वारा सूचित किया जायेगा।

पुरस्कार देनेवाले हैं

जिम्मेदारी

रामापुर के बड़े तालाब के किनारे कुछ ग़रीबों ने झोंपड़ियाँ खड़ी कर लीं और उनमें वे रहने लगे। ऐसी ही एक झोंपड़ी में सुदामा अपनी पत्नी और संतान के साथ रह रहा था।

सुदामा बहुत आलसी था। झोंपडी के सामने चारपाई पर लेटे-लेटे वह दिवा-स्वप्न देखा करता था, हवाई क़िले बनाता रहता था। उसका विश्वास था कि किसी न किसी दिन उसका भाग्य चमकेगा और एक दिन वह बडा संपन्न हो जायेगा। उसने सुन रखा था कि ऐसे कई लोग हैं, जो रत्ती भर भी मेहनत किये बिना भाग्यवान हो गये हैं। वह सोचता था कि मैं भी ऐसे भाग्यवानों में से एक क्यों नहीं हो सकता?

पति की इस अकर्मण्यता पर उसकी पत्नी विमला बहुत नाराज़ होती रहती थी। उसने उसे बहुत बार समझाने की कोशिश की कि काम नहीं करोगे तो पेट कैसे भरेगा। पर सुदामा उन बातों को अनसुनी कर देता था, उनपर कोई ध्यान ही नहीं देता था। बेचारी बिमला करे भी क्या? चार-पाँच घरों में काम करती और परिवार संभालती।

एक दिन सुदामा जब अपनी झोंपडी के सामने पडी चारपाई पर लेटा हुआ था तब एक दुबली-पतली कुतिया वहाँ आयी। उसी के पीछे उसके तीन पिल्ले भी आये। वे दूध पीने के लिए अपनी माँ पर पिल पड़ रहे थे। पर कुतिया उन्हें पर्याप्त दूध नहीं दे पा रही थी। भूखे पिल्ले थक गये और झोंपडी से बाहर कुछ दूरी पर गिर पड़े।

कुतिया धीरे से झोंपडी में अपना मुँह डालने ही वाली थी कि इतने में विमला वहाँ आ गई।

- ईश्वर -

उसने जब देखा कि कुतिया खाना खाने जा रही है तो दीवार से सटी एक लाठी उठायी और उससे फेंक कर मारा। कुतिया चिल्लाती बाहर भाग गयी।

विमला अब सोच में पड़ गयी कि जिस बर्तन में कुतिया ने अपना मुँह डाल दिया, वह खाना कैसे खाया जाये। कोई चारा और न पाकर उसने वह खाना बाहर फेंक दिया। कुतिया और उसके बच्चे तुरंत उस खाने के पास पहुँच गये। कुतिया ने पेट भर खा लिया और अब बच्चों को पिलाने के लिए पर्याप्त दूध उसके पास था।

दूसरे दिन ठीक उसी समय पर कुतिया झोंपड़ी में फिर घुसी। विमला ने इस बार भी उसे देख लिया और उसे पत्थर फेंक कर मारा। कुतिया चीखती-चिल्लाती वहाँ से भाग निकली। यह सब कुछ देखते-देखते हो गया।

इस चिल्लाहट से चारपाई पर पड़ा-पड़ा सपनों में खोया हुआ सुदामा चौंक कर उठ बैठा। उसने भाँप लिया कि क्या हुआ। वह चिढ़ता हुआ बोला, "यह कुतिया फिर आ गयी? कल उसे इतनी चोट पहुँची, फिर भी उसकी बुद्धि ठिकाने नहीं आयी।"

विमला उसे गुर्राकर देखती हुई बोली, "अपने बच्चों का पालन-पोषण करने के लिए बेचारी कुतिया तड़प रही है। चोट खायी तो क्या हुआ, खाना तो मिलेगा न! इसी उम्मीद में वह चोट सहने के लिए भी तैयार है। उसका लक्ष्य अपने बच्चों की परवरिश मात्र है। अपने बच्चों की भूख मिटाने के लिए एक कुतिया इतना तड़प सकती है लेकिन तुम जैसे आदमी के बारे में क्या कहूँ, जो अपनी जिम्मेदारी नहीं जानता, जो हाथ पर हाथ धरे बैठा रहता है और हवाई क़िले बनाता रहता है?" यह कहती हुई वह झोंपडी में चली गयी।

पत्नी की बातों के पीछे छिपा गूढ़ार्थ समझ गया सुदामा। वह चारपाई से उतरा, उसे एक कोने में डाल दी और काम की तलाश में बाहर निकल पड़ा।

व्यापारी की बुद्धि

एक व्यापारी था। वह व्याज पर रक़म देता था। साथ ही तरह-तरह के अन्य व्यापार भी किया करता था। थोड़े ही समय में उसने लाखों रुपये कमाये। उसे जब कभी भी फुरसत मिलती थी, वह पास ही के सरोवर पर चला जाता था और मछलियाँ पकड़ता था। उसे यह काम बहुत पसंद था।

एक दिन व्यापारी छोटी नाव में बैठकर मछली पकड़ने सरोवर के बीच चला गया और जाल फेंका। जाल में एक मछली फंस गयी। उस मछली को जाल से निकालकर उसने नाव में रख लिया।

वह कोई मामूली मछली नहीं थी। पाँच रंगों की वह मछली सूरज की कांति से दमक रही थी। व्यापारी उस मछली को देखकर आश्चर्य में पड गया। मछली सांस न ले पाने के कारण छटपटा रही थी। वह कहने लगी, ''मैं किन्नर जाति की मछली हूँ। तीन वर माँगो, दूँगी। जितनी जल्दी हो सके, मुझे सरोवर में छोड़ देना।''

''तीन नहीं, पाँच वर दो'', व्यापारी ने कहा।

मछली छटपटाती हुई बोली, ''तीन ही वर दूँगी। पाँच वर देने का सवाल ही नहीं उठता।'' वह हाँफती हुई बोली।

''तुमसे सौदा करने का मेरा इरादा नहीं है। बस, साढ़े चार वर दे देना।'' व्यापारी ने कहा।

''नहीं, तीन ही वर दूँगी।'' काँपते स्वर में मछली ने कहा।

''देखो, मैं व्यापारी हूँ। सौदा करने का मेरा स्वभाव नहीं है। बस, चार वर दे देना।'' व्यापारी ने कहा।

मछली ने कोई जवाब नहीं दिया, क्योंकि तब तक उसके प्राण-पखेरु उड़ चुके थे।

- शकुंतला.

आपके लिए प्रश्नोत्तरी
कोणार्क
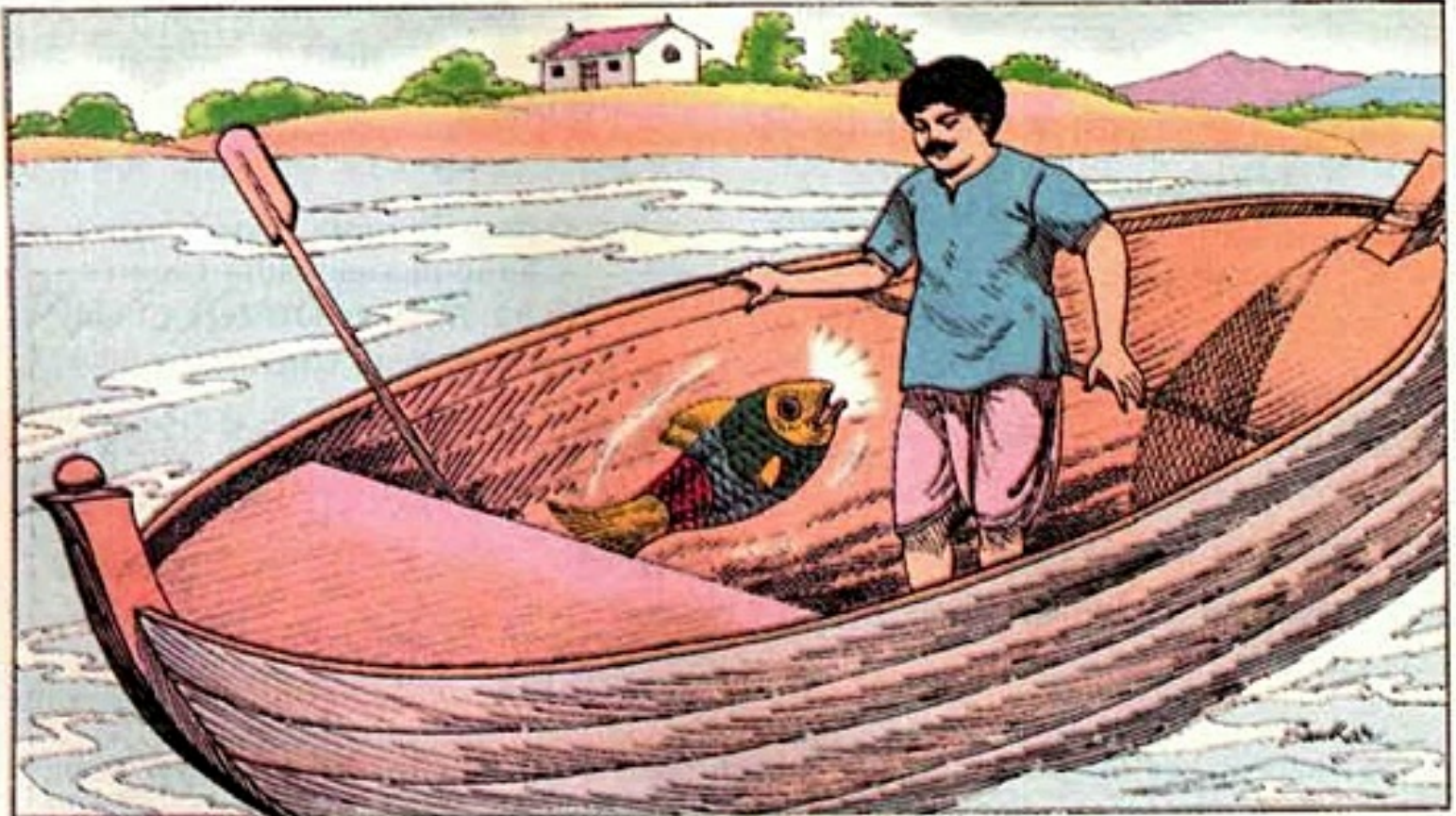
उड़ीसा के कोणार्क में सूर्य देवता को निवेदित एक विस्मयकारी मंदिर है। तेरहवीं शताब्दी में निर्मित यह मंदिर वास्तुकला का चमत्कार माना जाता है। वास्तव में कोणार्क शहर का नाम इसी सुन्दर मंदिर के नाम पर पड़ा है - कोण + आर्क यानी सूर्य का कोना।

इसकी प्रमुख विशेषताओं में से एक है - इसकी आकृति। यह सूर्य के विशाल रथ के आकार में निर्मित किया गया है। इस आश्चर्यजनक आकृति में बारह पहिये और इन्हें खींचनेवाले सात सजीव से घोड़े हैं। पहिये वर्ष के बारह महीनों के प्रतीक हैं और घोड़े सप्ताह के सात दिनों के। क्योंकि मंदिर की ऊँचाई से बंगाल की खाड़ी का जल प्रसार दिखाई पड़ता है, सूर्य की किरणों के विभिन्न कोण और भाव यह ग्रहण और प्रतिबिम्बित करता है।

इस मंदिर को काला पगोड़ा के नाम से भी जाना जाता है। मंदिर की मुख्य मीनार जो ७० मी. ऊँची थी ध्वस्त हो गई है, किन्तु नृत्य कक्ष और दर्शक दीर्घा सुरक्षित हैं। सम्पूर्ण मंदिर में मनोहर नक्काशी और मूर्तियाँ उत्कीर्ण हैं। यह भारत के उन अनेक कीर्ति स्तम्भों में से एक है जिसे यूनेस्को द्वारा विश्व परम्परा स्थल (वर्ल्ड हेरिटेज साइट) के रूप में मान्यता प्राप्त है।

सूर्य मंदिर का अजायबघर, जिसमें मंदिर के भग्नावशेष से एकत्र की गई मूर्तिकलाएँ संगृहीत हैं, कोणार्क का दूसरा आकर्षण है।

आपके लिए प्रश्नोत्तरी !
१४ वर्ष की आयु तक के बच्चों के लिए।
प्रतियोगिता - IV

१. सूर्य मंदिर से कुछ दूरी पर कुशभद्र नदी और समुद्र के संगम स्थल पर एक प्रसिद्ध मंदिर निर्मित है। वह कौनसा मंदिर है ?

....

२. उड़ीसा के उस समुद्र तट का नाम लिखें जो कभी बन्दरगाह था।

....

३. उड़ीसा के किस बाँध से एशिया के विशालतम कृत्रिम झील का निर्माण हुआ है ?

....

अपने उत्तर स्पष्ट अक्षरों में रिक्त स्थानों में लिखें, और नीचे लिखे कूपन को भरकर निम्न लिखित पते पर भेज दें :

Orissa Tourism Quiz Contest
Chandamama India Limited
No.82, Defence Officers Colony
Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

नाम : ....

आयु : ....

पता : ....

....

पिन.................... फोन ....

Winners picked by Orissa Tourism in each contest will be eligible for **3-days, 2-night** stay at any of the **OTDC Panthanivas**, upto a maximum of four members of a family. Only original forms will be entertained. The competition is not open to CIL and Orissa Tourism family members. *Orissa Tourism, Paryatan Bhaven, Bhubaneswar-751 014. Ph: (0674) 432177,* Fax : (0674) 430887, e-mail : ortour@sancharnet.in. Website : Orissa-tourism.com

यक्ष पर्वत

12

(खड्ग और जीवदत्त ने बडी ही चालाकी से बीरपुर के सैनिकों को बिलदुर्ग में घेर लिया। सेनाध्यक्ष और सभी सैनिकों ने अपनी हार मान ली। समरबाहु के साथ जब वे पहाड़ी दुर्ग के पास आये तब वहाँ उन्होंने बीरपुर के वृद्ध मंत्री को देखा। मंत्री ने समरबाहु को स्वतंत्र राजा घोषित किया। फिर खड्ग और जीवदत्त को लेकर नदी के पास गया।) -उसके बाद

खड्ग और जीवदत्त बीरपुर के मंत्री के साथ नदी के किनारे आये। नदी में रथ के आकार की एक नाव थी। वह उन्हीं की तरफ़ बढ़ी चली आ रही थी। खड्ग और जीवदत्त ने उसे ध्यान से देखा। वे जान गये कि यह रथ के आकार में बनी काठ की नाव है।

जीवदत्त ने बीरपुर के मंत्री की ओर मुड़कर देखा और कहा, ''महामंत्री, आप बता रहे थे कि एक यक्ष के द्वारा आपको हमारे बारे में जानकारी प्राप्त हुई। क्या आप उस यक्ष से नाव में मिले?''

''क्षत्रिय योद्धाओ, मैं तुम लोगों से कुछ भी छिपाना नहीं चाहता। जो भी हुआ है, साफ़-साफ़ बता दूँगा। पिछली रात के दूसरे पहर को एक यक्ष आकाशमार्ग से आया। उस समय बीरपुर की राजपुत्री बसंतकुमारी अपनी सहेलियों के साथ बातें कर रही थी। यक्ष ने बलपूर्वक उसका अपहरण किया और राजपुत्री को अपने साथ ले गया। लौटते समय वह भवन पर एक तालपत्र छोड़कर गया। तालपत्र में जो लिखा हुआ था, उससे पता चला कि उसी ने इसके पहले पद्मसेन महाराज की पुत्री पद्मावती का भी अपहरण इसी प्रकार से किया था।'' मंत्री ने कहा।

तब तक नाव किनारे आ चुकी थी। यक्ष की तरह आभूषणों से सजा एक व्यक्ति नाव के अग्रभाग में आया और क्षण भर के लिए सबको ध्यान से देखने के बाद कहने लगा, ''विंध्य पर्वत पर के पत्थर के रथ को सरकानेवाला वीर तुममें से कौन है?''

खड्ग और जीवदत्त दोनों ने बिना कुछ कहे अपने-अपने हाथ उठा दिये। तब यक्ष ने व्यंग्य भरे स्वर में कहा, ''तब तुम दोनों नाव में आ सकते हो। मैं तुम्हें यक्षपर्वत ले जाऊँगा, जहाँ मेरा मित्र यक्षमणि रंजित रहता है। पद्मावती एवं वसंताकुमारी भी वहीं हैं, जिनसे वह विवाह करने जा रहा है।'' यक्ष ने कहा।

खड्ग और जीवदत्त मंत्री को वहीं छोड़कर नाव में चले गये। जीवदत्त ने यक्ष से उसका नाम पूछा।
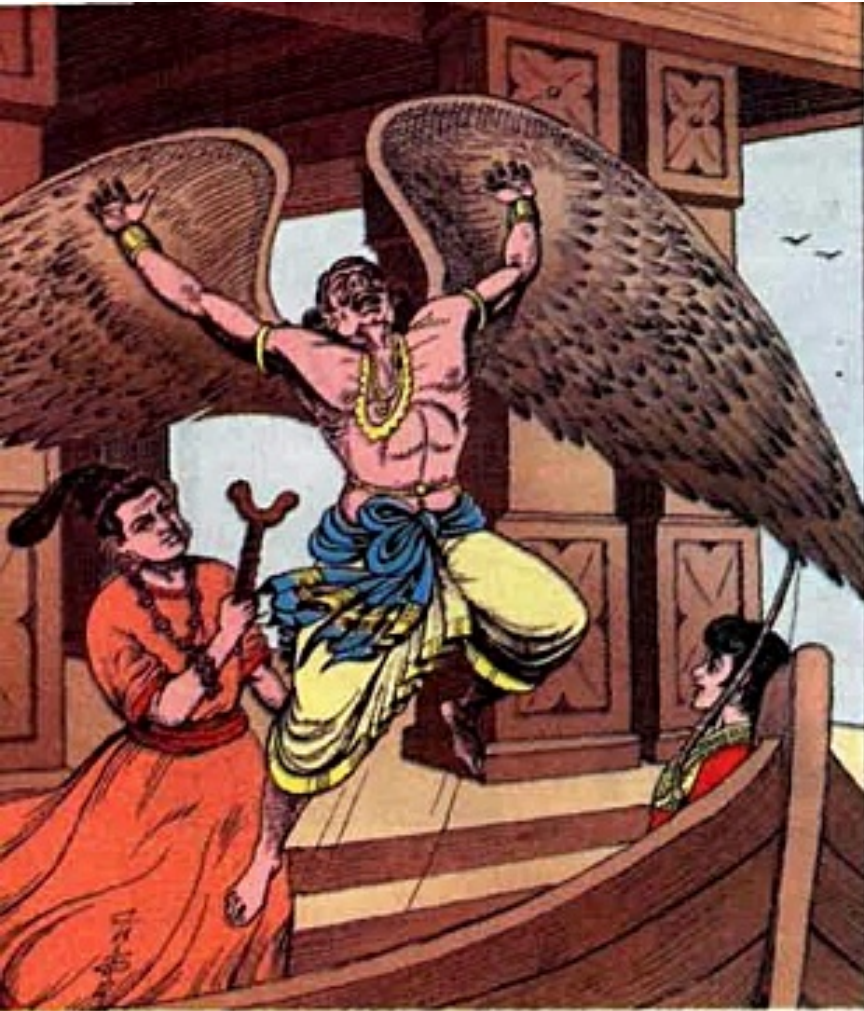
मंत्री की बातें सुनते ही जीवदत्त गंभीर हो उठा और बोला, ''यही यक्ष हमसे अरण्यपुर नामक प्रदेश में मिला। उसने हमसे झूठ कहा कि उसने पद्मावती से विवाह कर लिया और उसे अपने यहाँ ले जा रहा है।''

''ऐसी ही बात है, जीवदत्त। जो तालपत्र वह छोड़ गया था, उसमें यह भी लिखा हुआ था कि विंध्य पर्वतों पर स्थित पत्थर से बने एक रथ को तुम लोगों ने सरकाने की प्रतिज्ञा की थी। क्या यह सच है?'' मंत्री ने पूछा।

जीवदत्त जवाब देने ही वाला था कि इतने में खड्गवर्मा ने कहा, ''हाँ, यह सच है। उस दुष्ट यक्ष को दंड देंगे और उसके चंगुल में फंसी पद्मावती व वसंता को यदि नहीं छुड़ाया तो हम क्षत्रिय ही नहीं।''

''मेरा नाम मणिभूषण है। मेरा मित्र मणिरंजित पराक्रम में असमान्य है। उसकी टक्कर का कोई अन्य नहीं। मंत्रतंत्र की शक्तियों में वह असाधारण है। यक्ष पर्वत आना तुम दोनों के लिए जान-बूझकर खतरा मोल लेना साबित हो सकता है। अपनी मौत का स्वागत तुम स्वयं कर रहे हो।'' यक्ष ने कहा।

''अच्छा, ऐसी बात है !'' कहते हुए जीवदत्त ने अपना मंत्रदंड उसकी भुजा पर रखा। यक्ष तुरंत थरथर कांपने लगा। उसे लग रहा था, मानों अचानक उसपर बिजली गिर पड़ी हो। वह कहने लगा, ''यह क्या मंत्रदंड है? तुममें क्या इतनी अद्भुत शक्तियाँ हैं?''

जीवदत्त ने मौन हो मंत्र का जप किया और

इस बार उसने अपनी तर्जनी से उस यक्ष का स्पर्श किया। यक्ष ज़ोर से हाहाकार करता हुआ ज़मीन पर गिर पड़ा। थोड़ी देर बाद अपने को संभालते हुए उसने कहा, ''तुम मेरे मित्र के समान सशक्त हो। क्या मैं जान सकता हूँ, तुम दोनों में यह शत्रुता कैसी?''

खड्गवर्मा ने क्रोधित होकर अपनी तलवार उसपर उठायी और गरजते हुए कहा, ''बंद करो बकवास। व्यर्थ बातें मत करो। चुपचाप यक्षपर्वत की ओर नाव ले चलो, जहाँ तुम्हारा मित्र निवास करता है। उसे टुकड़ों में काटकर कौओं और गिद्धों को फेंक देंगे। उसका नामोनिशान मिटा देंगे।''

दो मानवों को इस प्रकार उसे डराता हुआ देखकर यक्ष अपमान-भार से झुक गया और विनम्र स्वर में कहने लगा, ''क्षत्रिय योद्धाओ, मणिरंजित ने तुम दोनों को अपने पास ले आने का आदेश दिया है। राजकुमारियों के अपहरण में या पत्थर के रथ के विषय में मेरा कोई हाथ नहीं है।''

जीवदत्त की आज्ञा के अनुसार यक्ष ने नाव की पतवार संभाली और नदी के बीच में से उसे ले जाने लगा। किनारे पर खड़े मंत्री ने हाथ उठाकर खड्ग और जीवदत्त को आशीर्वाद दिया।

नदी के बीच में जब नाव आयी तब जीवदत्त को संदेह हुआ कि कहीं यह वही नाव तो नहीं, जिसमें बैठकर मणिरंजित आकाशमार्ग में उडता है। यक्ष से उसने अपना संदेह व्यक्त किया।

मणिभूषण ने कहा, ''यह वह नाव नहीं है। वे रथ के आकार में बनी वस्तुएँ बहुत पसंद करते हैं।''

जीवदत्त इसपर हँस पड़ा। वह अब दोनों ओर के ऊँचे पर्वतों और वहाँ के बड़े-बड़े वृक्षों को देखने लगा। फिर उसने यक्ष से पूछा, ''क्या यह सब विंध्य पर्वतीय प्रांत ही है?''

यक्ष ने ''हाँ'' के भाव में सिर हिलाया। अस्त होते हुए सूर्य को देखते हुए जीवदत्त ने खड्गवर्मा से कहा, ''हम रात को नदी के किनारे भोजन का प्रबंध कर लेंगे और सूर्योदय होते ही निकल पड़ेंगे। मैं समझता हूँ, ऐसा ही करना उत्तम होगा।''

उसकी बातें सुनकर मणिभूषण चिढ़ता हुआ बोला, ''मेरे मित्र ने तुम दोनों को यथासंभव

शीघ्र ले आने का आदेश दिया है। हम रात को यहीं रह जायेंगे तो विलंब होगा और समय नष्ट होगा।''

जीवदत्त ने कठोर स्वर में उसे डांटते हुए कहा, ''यहाँ हमारी आज्ञा चलती है। हम होते हैं आज्ञा देनेवाले। तुम्हारे उस मित्र की आज्ञा यहाँ नहीं चलती, जो कन्याओं के अपहरण में सिद्धहस्त है। पतवार घुमाओ और नाव को किनारे ले चलो। सुना तुमने?''

यक्ष चुपचाप नाव को नदी के बीच में से किनारे ले आया। किनारे पर पहुँचते ही खड्ग और जीवदत्त नाव से नीचे कूद पड़े। तब जीवदत्त ने खड्गवर्मा से कहा, ''खड्ग, इस घने जंगल में हिरण का शिकार करके अभी लौटता हूँ। इस बीच तुम सूखी लकड़ियाँ इकट्ठी करके उनमें आग सुलगाना।''

ये बातें सुनकर मणिभूषण डरता हुआ बोला, ''इन घने जंगलों में, इन ऊँचे पर्वतों की गुफाओं में भयंकर राक्षस रहते हैं। क्यों खतरा मोल लेते हो?''

जीवदत्त ने हँसकर कहा, ''डरपोक कहीं के, तुम्हारे यक्ष राक्षसों से भी भयंकर हैं। मंत्रतंत्र में पटु हैं। जब मैं उन्हीं के बीच जानेवाला हूँ तो इन राक्षसों से भय काहे का।'' यह कहता हुआ वह पेड़ों में से होता हुआ आगे बढ़ गया।

पंद्रह मिनटों में उसने एक हिरण का शिकार करके उसे मार डाला और उसे अपने कंधे पर लादकर वहाँ पहुँच गया। दोनों ने मिलकर हिरण को काटा और उसके माँस को आग पर भुनने लगे। मांस के जलने की गंध चारों ओर व्याप्त हो गयी।

उस समय विकृत आकार की एक राक्षसी वृक्षों में से हाथ फैलाती हुई आगे आती हुई चिल्लाने लगी, ''मानव गंध, मानव गंध।''

राक्षसी को देखते ही खड्गवर्मा ने म्यान

से तलवार निकाली। तब जीवदत्त ने उसे रोकते हुए राक्षसी से कहा, ''मानव गंध के साथ-साथ हिरण के मांस की गंध भी यहाँ आ रही है। तुम राक्षसी हो या राक्षसी के रूप में यक्ष हो।'' ''आखिर तुम हो कौन? मानव होते हुए मुझे देखकर तुम्हें डर नहीं लगता? उल्टे मुझसे ही सवाल करने लगे?'' राक्षसी ने पूछा।

जीवदत्त ने तुरंत अपना मंत्रदंड राक्षसी के सिर पर रखा और पूछा, ''अरी राक्षसी, अब बता। हम मामूली मानव हैं या...'' कहता हुआ रुक गया।

राक्षसी का शरीर पसीने से सराबोर हो गया। वह कहने लगी, ''तुम लोग मानव नहीं हो सकते। शायद यक्ष हो। मेरे दोनों बेटों को बंदी बनाकर तुम ही अपने यक्षपर्वत पर ले गये थे। पर मुझे भी बंदी बनाकर मत ले जाना। मैं बूढ़ी हो गयी हूँ। यक्षपर्वत पर पत्थरें तोड़कर तुम लोगों के लिए सोना और मणियाँ बाहर निकाल नहीं सकती। अब मुझमें उतनी शक्ति रह नहीं गयी है।''

जीवदत्त ने राक्षसी को ढाढ़स बंधाते हुए कहा, ''तुम्हें मारने का मेरा उद्देश्य नहीं है। लगता है, तुम यक्षपर्वत के बारे में बहुत कुछ जानती हो, हम दोनों यक्षपर्वत ही जा रहे हैं। देखो, उस नाव में जो है, वह यक्ष है। उनसे संबंधित रहस्य यहाँ मत बताना। आगे बढ़ो और मुझे अपनी गुफा में ले चलो।''

''मानव, मेरी गुफा पास ही है। मेरा पति गुफा में ही है। वह तुम्हें यक्षपर्वत के

बारे में बहुत-से रहस्य बतायेगा।'' राक्षसी ने कहा।

राक्षसी अब भी भय से काँप रही थी। फिर भी साहस बटोरकर वह जीवदत्त को लिये चार-पाँच मिनटों के अंदर ही एक गुफा के मुखद्वार पर पहुँची। गुफा के सामने एक बृहतकाय राक्षस मशाल की रोशनी में चट्टान से सटकर बैठे ऊँघ रहा था।

वह चौंककर जाग उठा और जीवदत्त को देखकर कहने लगा, ''ताज्जुब, ताज्जुब, एक मानव और यहाँ! निर्भय होकर वह तुम्हारे साथ आया। कौन है यह?''

राक्षसी पहले अपने पति के पास आयी और धीमे स्वर में कहने लगी, ''भूख के मारे कहीं इसे मारकर चबा न बैठना। इस मानव के हाथ में महिमामयी मंत्रदंड है। इसने और इसके दोस्त

ने मिलकर एक यक्ष को बंदी बना लिया है। वह अब नाव में पड़ा हुआ है।''

राक्षस ने जीवदत्त को आँखें फाड़-फाड़कर देखा और पूछा, ''हे अद्‌भुत मानव , मेरी पत्नी की कही बात क्या सच है? यह थोड़ी-सी पगली है।''

जीवदत्त ने मुस्कुराकर कहा, ''तुम्हारी पत्नी ने जो भी कहा, सब सच है। सुना है कि यक्ष ने तुम्हारे दोनों बेटों को क़ैद कर लिया और उन्हें यक्षपर्वत ले गये। क्या उस यक्षपर्वत के रहस्य जानते हो?''

राक्षस ने सिर हिलाया और थोड़ी देर तक ज़मीन को देखता रहा। फिर कहने लगा, ''यक्षपर्वत व उसके प्राश्र्ववर्ती प्रांतों का अधिपति है मणिरंजित। यक्ष राजा ने बहुत पहले उसे इस प्रांत का अधिपति बनाया था। वह बड़ा ही दुष्ट व पापी है। कोई ऐसा अपराध नहीं, जिसे उसने न किया हो।''

''मुझे भी मालूम है कि वह बड़ा दुष्ट व दुरात्मा है। हमारे देश की दो राजकुमारियों का अपहरण करके ले गया है वह। अब बताओ, वहाँ पत्थर का कोई रथ है?'' जीवदत्त ने पूछा।

''हाँ, हाँ। कहा जाता है कि उस रथ का निर्माण पर्वत के पत्थरों से ही हुआ है।''

जीवदत्त ने वहाँ से लौटते हुए राक्षसी से कहा, ''मानव गंध समझकर तुम मेरे यहाँ चली आयी। यह अच्छा ही हुआ। मेरे साथ आओ और हिरण का मांस जितना तुम चाहती हो, ले जाओ।''

थोड़ी देर बाद राक्षसी को जीवदत्त के साथ आता देखकर यक्ष मणिभूषण भय के मारे थरथर कांपने लगा। खड्‌गवर्मा से कहने लगा, ''यह क्या? तुम्हारा दोस्त एक राक्षसी को साथ लिये आ रहा है?''

''शायद तुम्हें उसका आहार बनायेगा। उसे आने दो, पूछकर जान लेंगे।'' ठठाकर हँसते हुए खड्‌गवर्मा ने कहा।

''यह घोर अन्याय है। मणिरंजित सिर्फ़ मेरा मालिक है। वह मेरा दोस्त नहीं है। मैं बस, उसकी आज्ञा का पालन करता हूँ। जहाँ तक मुझे मालूम है, मैंने अपनी तरफ़ से किसी को भी कोई हानि नहीं पहुँचायी।'' मणिभूषण ने कांपते स्वर में कहा।

आते हुए जीवदत्त ने मणिभूषण की बातें सुन ली थीं। वह नाराज़ होकर बोला,

''मणिभूषण, अभी से डर के मारे मरना मत। अगर मैं और खड्गवर्मा तुम्हारे स्वामी को यदि जीत नहीं पाये तो तुम यक्षों को पकड़कर राक्षसों की सेना तरह-तरह से सतायेगी। उनकी बहुत बडी सेना तैयार बैठी है। वे तुम्हारे पर्वत का सर्वनाश करने पर तुले हैं। मेरी बात शत प्रतिशत सच है।''

''राक्षस सेना।'' कहता हुआ मणिभूषण हक्का-बक्का रह गया। उसका चेहरा फीका पड गया।

''हाँ, हाँ, राक्षस सेना ही।'' फिर राक्षसी की ओर मुड़कर जीवदत्त ने कहा, ''शरमाने की कोई बात नहीं। हिरण का जितना मांस चाहिए, ले जाओ। एक और बात सुनो। अपने हज़ारों राक्षसों के महान नेता महोग्रनेत्र से कहो कि यक्षपर्वत पर आक्रमण में थोड़ा और समय शेष है। पर यह आक्रमण कभी भी हो सकता है। उसे सन्नद्ध रहने को कहो।''

राक्षसी सिर हिलाती हुई अधिकाधिक मांस लेकर अपनी गुफ़ा की ओर चल पड़ी। फिर तीनों भोजन करने के पश्चात एक पेड के नीचे के पत्थरों पर लेट गये। मणिभूषण उन दोनों से दूर लेटा था। सो जाने के पहले उसने दो-तीन बार नाव देखी। खड्गवर्मा ने उसका नाव को बार-बार देखना देख लिया था। उसने खड्गवर्मा से धीमे स्वर में कहा, ''यक्ष भयभीत है। वह हमसे बहुत डर रहा है। मुझे संदेह है कि आधी रात को कहीं यह नाव में बैठकर भाग न जाये। उसपर नज़र रखना।''

खड्गवर्मा के मन में भी मणिभूषण के बारे में ऐसा ही संदेह था। इसलिए उसने सो जाने का नाटक किया और गतिविधि को छिपकर देखने लगा। आधी रात को भूमि को सूँघते हुए एक रीछ और एक भेड़िया वहाँ आ धमके। शायद उन्होंने भी हिरण के मांस की गंध सूंघी होगी। वे चक्कर काटकर मणिभूषण के पास जाने ही वाले थे कि खड्गवर्मा फुर्ती से उठ बैठा और उसने उनपर एक छोटा-सा पत्थर फेंका। वे डरकर वहाँ से भाग निकले।

जानवरों के भागने की आवाज से मणिभूषण भी जाग गया और चारों ओर देखते और चिल्लाते जाने लगा, ''खड्ग, जीवदत्त, उठो! राक्षसों की सेना बढ़ी चली आ रही है!''

(समाप्ति अगले अंक में)

शोहरत

श्रीपति रामपुर का जमींदार था। गौरीशंकर जमींदार के कामकाज बड़ी ही दक्षता और जिम्मेदारी के साथ संभालता था। लेकिन एक दिन अचानक उसकी मृत्यु हो गयी।

अब श्रीपति की समझ में नहीं आ रहा था कि उसकी जगह पर वह किसे नियुक्त करे।

रानी के रसोई-घर में काम करती थी रुक्मिणी। वह एक दिन जमींदार से मिलने आयी।

श्रीपति ने उससे पूछा, ''बात क्या है? यहाँ कैसे आयी?'' रुक्मिणी ने कहा, ''मालिक, रानी साहिबा से मालूम हुआ कि आप किसी नये अधिकारी की खोज में हैं।''

''हाँ, हाँ, खोज में हूँ। जमींदारी का भार संभालने के लिए एक योग्य व्यक्ति की मुझे सख्त जरूरत है। सोच रहा हूँ कि किसे नियुक्त किया जाए?'' जमींदार ने लंबी सांस खींचते हुए कहा।

''सरकार, अपने बेटे केशव के बारे में बताने आयी हूँ। आप उसे अच्छी तरह जानते हैं। गौरीशंकर भी उसे बहुत चाहते थे। अक्लमंद है, फुर्तीला है। जी लगाकर काम करेगा।'' रुक्मिणी ने कहा।
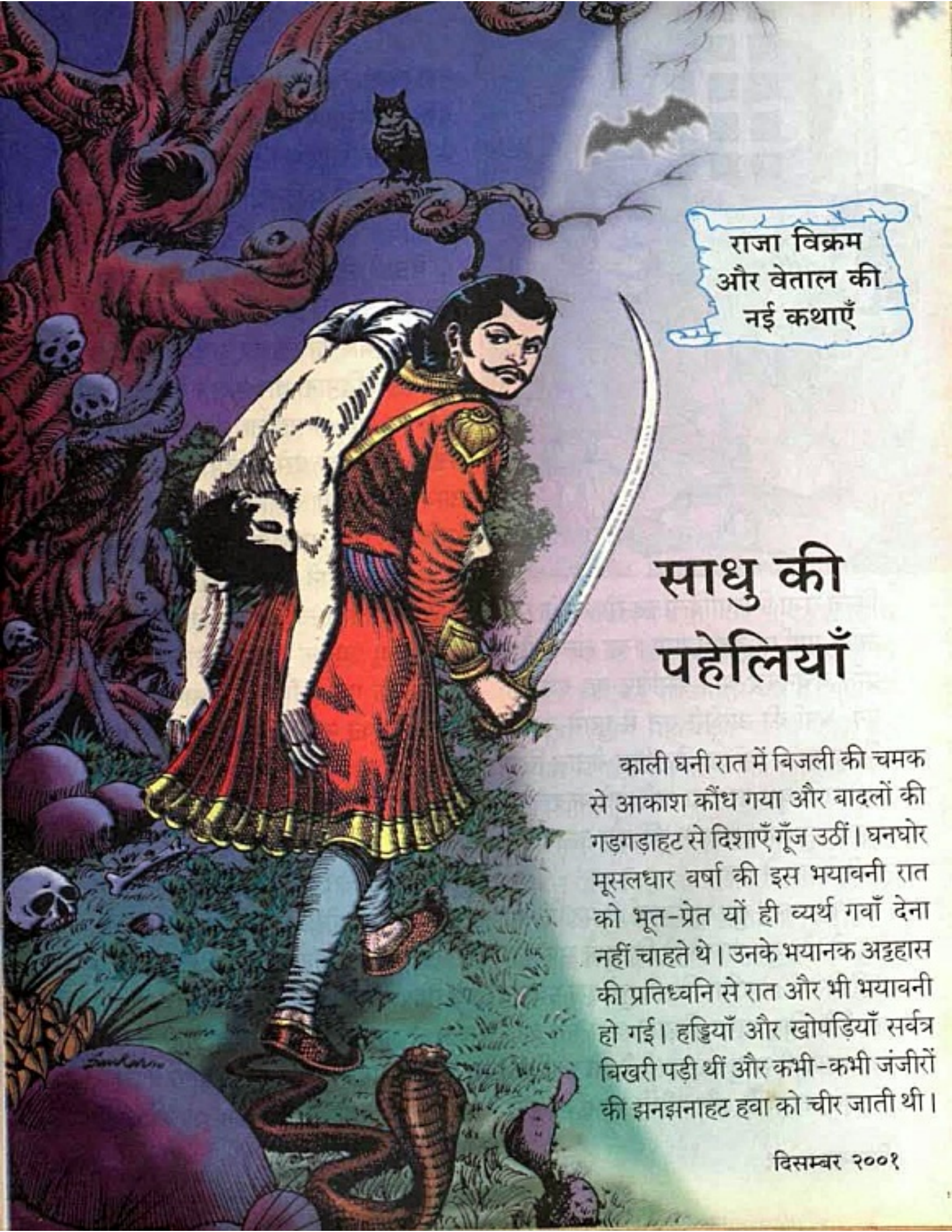
श्रीपति हँस पड़ा और बोला, ''तुमने जो भी कहा, ठीक है। तुम्हारे बेटे से दो-तीन बार मिल भी चुका हूँ। पर इस काम के लिए ऐसे आदमी की जरूरत है, जिसकी काफी शोहरत हो। तुम्हारे बेटे में यह खासियत तो है नहीं।''

रुक्मिणी एक पल तक सोच में पड़ गयी। फिर उसने कहा, ''मालिक, आप जिस ओहदे पर उसे नियुक्त करेंगे, वह ओहदा ही उसे शोहरत दिला देगा।''

दूसरे ही दिन जमींदार ने रुक्मिणी के बेटे को गौरीशंकर की जगह पर नियुक्त कर लिया।

- प्रताप वर्मा
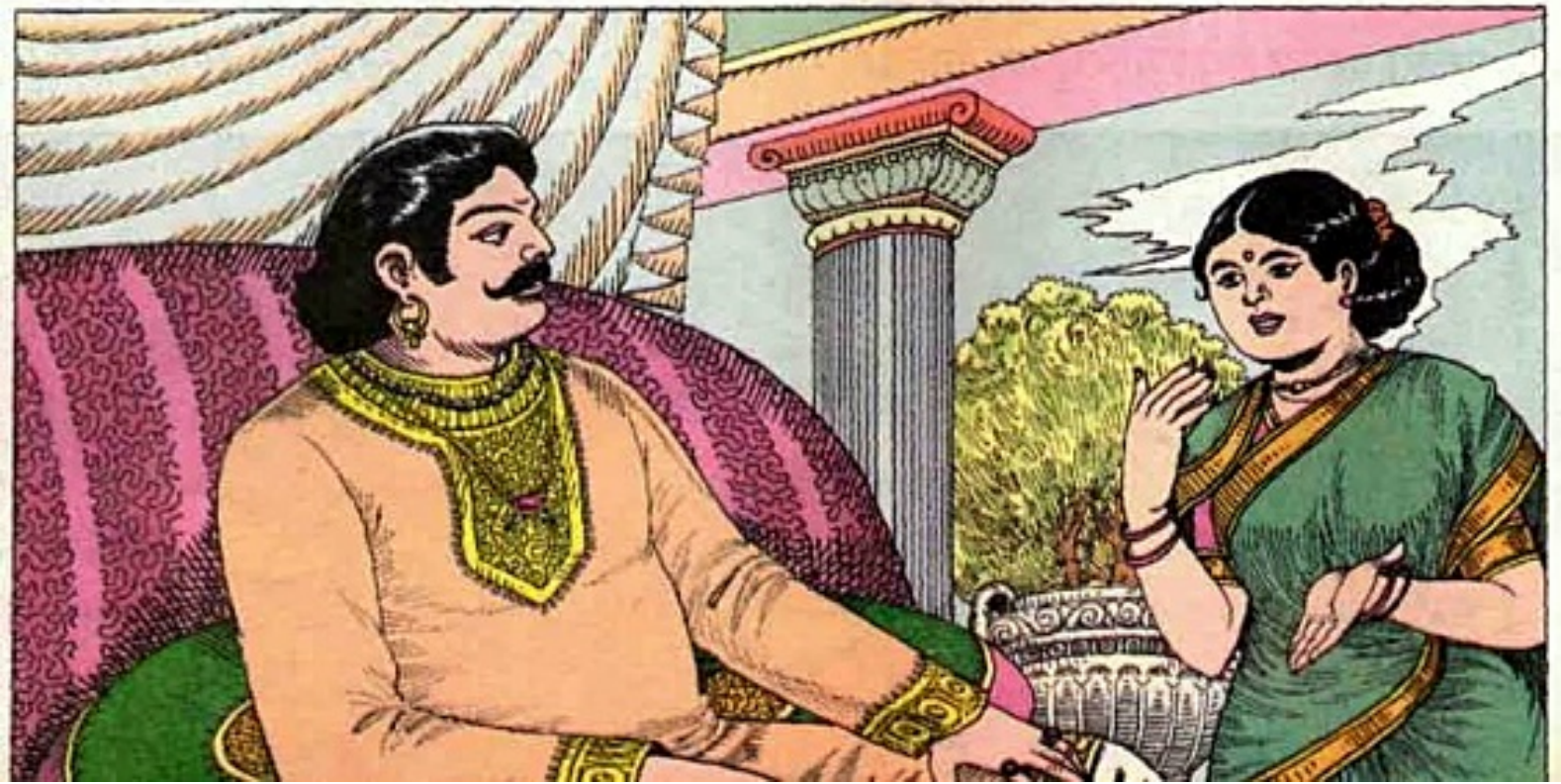
साधु की पहेलियाँ

काली घनी रात में बिजली की चमक से आकाश कौंध गया और बादलों की गड़गड़ाहट से दिशाएँ गूँज उठीं। घनघोर मूसलधार वर्षा की इस भयावनी रात को भूत-प्रेत यों ही व्यर्थ गवाँ देना नहीं चाहते थे। उनके भयानक अट्टहास की प्रतिध्वनि से रात और भी भयावनी हो गई। हड्डियाँ और खोपड़ियाँ सर्वत्र बिखरी पड़ी थीं और कभी-कभी जंजीरों की झनझनाहट हवा को चीर जाती थी।

किन्तु राजा विक्रमादित्य दृढ़ संकल्प के साथ अपने मार्ग पर बढ़ता गया। वह संन्यासी के प्रति वचनबद्ध था। इसलिए वह एक बार पुनः वर्षा की अन्धेरी रात में पुराने वृक्ष के निकट गया जहाँ शव के भीतर वेताल छिपा था। राजा वृक्ष पर चढ़ा और कंधे पर शव को रखकर सुनसान श्मशान की ओर चल पड़ा। तभी वेताल ने कहा -

''हे राजन ! तुम क्यों व्यर्थ ही यह परिश्रम कर रहे हो। तुम जानते हो कि तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी। आखिर किसने तुझे इस भयंकर कार्य के लिए बाध्य किया? क्या वह कोई एकान्तवासी साधु-संन्यासी है जो पहेलियों में बात करता है और सीधी भाषा में कुछ नहीं कहता? यह तो अनुमान लगाना कठिन है कि इनके मन में क्या है। शायद एक कहानी के माध्यम से तुम मेरा अभिप्राय समझ जाओ और मार्ग की कठिनाई भी थोड़ी सरल हो जाये।''

बेताल ने इतना कहकर यह कहानी सुनाई :

''एक बार मार्तण्ड देव नाम का एक राजा था। वह बुद्धिमान और कुशल शासक था। उसे एक नये सलाहकार की आवश्यकता पड़ी। उसे एक ऐसे बुद्धिमान व्यक्ति की आवश्यकता थी जो निर्णय लेने के पहले सभी तथ्यों पर सावधानीपूर्वक विचार कर ले। आखिर उसने अपने एक चतुर, तीक्ष्ण बुद्धिवाले, हाजिर-जवाब दरबारी मणिभद्र को इसके लिए उपयुक्त समझा। लेकिन उसकी नियुक्ति के पूर्व रानी ने एक अन्य दरबारी विश्वबन्धु का नाम भी सुझाया। वह अपने आप को इस पद का दावेदार मानता था। वह रानी का मामा लगता था।

''मेरा मामा विश्वबन्धु मणिभद्र से कम बुद्धिमान नहीं है। इसके अतिरिक्त वह उससे अधिक वरिष्ठ और अनुभवी भी है। मेरी दृष्टि में वह योग्य सलाहकार सिद्ध होगा। आप यह पद उसी को क्यों नहीं दे देते?'' रानी ने राजा से अनुरोध करते हुए कहा।

''यदि वह सचमुच इतना योग्य है जैसा तुम समझती हो तो मुझे कोई आपत्ति नहीं

है। किन्तु निश्चय करने से पहले हमें उन दोनों की परीक्षा लेने का कोई मौका देखना चाहिए।'' राजा ने उत्तर दिया।

यह अवसर शीघ्र ही आ गया। राज्य में एक धनी व्यापारी रहता था। उसकी एक सुन्दर कन्या थी। उसके साथ विवाह करने के इच्छुक तीन युवक थे। वे तीनों ही कन्या के योग्य और उपयुक्त लगते थे। व्यापारी यह निर्णय नहीं कर पाया कि कन्या का वर किसे चुने। इसलिए वह पहाड़ी पर रहनेवाले साधु के पास गया। व्यापारी को साधु की अन्तर्दृष्टि में पूरी निष्ठा थी।

उन महात्मा ने तीनों युवकों को कुछ देर तक ध्यानपूर्वक देखा और बिना कुछ बोले उनमें से एक को एक सीप मिट्टी, दूसरे को एक सीप पानी और तीसरे को एक सीप अनाज दिया।

व्यापारी को साधु का अभिप्राय समझ में नहीं आया। इसलिए वह उस महात्मा के कार्य का मर्म समझने के लिए तीनों युवकों को राजा के दरबार में ले गया।

राजा ने तीनों युवकों से महात्मा के कार्य का अभिप्राय पूछा। ''महाराज!'' प्रथम युवक ने कहा, ''मुझे मिट्टी से भरा हुआ सीप दिया गया। मिट्टी के बिना न जल का, न बीज का कोई उपयोग है। इसलिए मैं यह समझता हूँ कि मैं ही महात्मा जी की दृष्टि में व्यापारी की कन्या का योग्यतम वर हूँ।''
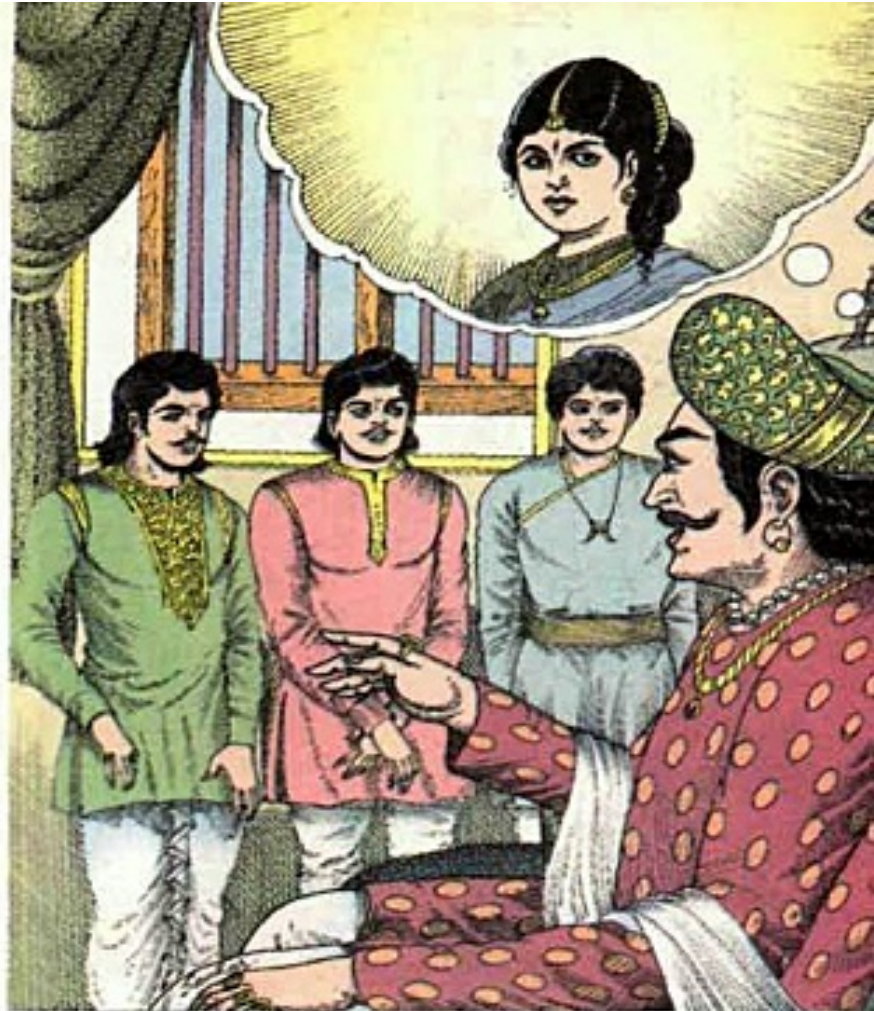
दूसरे युवक ने कहा, ''मैं तो यह समझता हूँ कि जल के बिना मिट्टी और अन्न दोनों ही व्यर्थ हैं। जीवन का आधार जल है। महात्मा ने मुझे सबसे महत्वपूर्ण पदार्थ देकर यह संकेत दिया है कि कन्या का उपयुक्त वर मैं हो सकता हूँ।

तीसरे का दृष्टिकोण भिन्न था। उसने कहा, ''जल और मिट्टी तो अन्न उत्पादन की शर्तें मात्र हैं। महत्वपूर्ण तो अनाज है। महात्मा ने मुझे अनाज देकर अपना अभिप्राय स्पष्ट कर दिया है।''

राजा दुविधा में पड़ गये। उन्हें तीनों युवकों की बातें युक्तियुक्त प्रतीत हुईं। उसके मन में एक विचार आया। उसने सोचा कि मेरे

सलाहकार के लिए दोनों प्रत्याशियों की बुद्धिमता और उपायकुशलता की परीक्षा लेने का यह अच्छा अवसर है। संयोगवश मणिभद्र और विश्वबन्धु दोनों दरबार में मौजूद थे।

राजा ने विश्वबन्धु की ओर देखा, ''आपकी राय क्या है?''

''मेरी राय में निस्सन्देह जल तीनों में सर्वाधिक महत्वपूर्ण है। यह मिट्टी और अनाज दोनों को अर्थ प्रदान करता है। जल के बिना मिट्टी अनाज नहीं दे सकती।'' विश्वबन्धु ने कहा।

''और मणिभद्र! तुम्हारा क्या विचार है?'' राजा ने मणिभद्र की ओर देखकर कहा।

''महाराज! अपनी राय देने से पूर्व मैं सभी तथ्यों और वस्तुओं को अधिक निकट से परखना चाहूँगा।'' मणिभद्र ने कहा। फिर उसने जल को चखा, मिट्टी को सूंघा और अनाज के दानों को अंगुलियों से छूकर देखा। कुछ देर सोच कर फिर उसने बताया, ''महाराज! साधु की नज़र में कन्या के लिए उत्तम वर वही होगा जिसे उन्होंने मिट्टी दी है।''

लेकिन इससे राजा की समस्या का समाधान अब भी नहीं हुआ। राजा के अनुरोध पर साधु को आदर के साथ दरबार में लाया गया। उसने शान्त और मधुर मुस्कान के साथ कहा, ''सच्चा रत्न दुर्लभ होता है। तुम्हारे दरबार में एक है। उसे पहचानो। इससे तुम्हारा और तुम्हारे राज्य दोनों का कल्याण होगा।''

राजा मार्तण्ड देव ने उसकी ओर देखा। उसने महात्मा का संकेत समझ लिया और मुस्कान में ही उत्तर दे दिया। उसने अपने सलाहकार के नाम की घोषणा तुरन्त कर दी।''

बेताल ने कहानी समाप्त कर राजा विक्रमादित्य से पूछा, ''हे राजन! लगता है, साधु बराबर पहेलियों की भाषा में बात करता है। राजा ने अपना सलाहकार किसे नियुक्त किया? और क्यों? साधु के द्वारा राजा के सामने रखी गई अंतिम पहेली को उसने कैसे सुलझाया? यदि तुम सही उत्तर जानते हुए भी मौन बने रहे तो तुम्हारे सिर के अनेक खण्ड हो जायेंगे।''

राजा विक्रमादित्य ने मौन भंग करते हुए

कहा, ''राजा मार्तण्ड देव स्वयं बहुत बुद्धिमान था। जब वह पहली बार व्यापारी की कन्या के लिए वर के चुनाव के संबंध में साधु की पहेली के बारे में सुना तब वह तीनों युवकों के बुद्धिसंगत उत्तर सुनकर चकरा गया। किन्तु उपाय-कुशल होने के कारण उसने मौके से लाभ उठाया और अपने सलाहकार पद के दोनों उम्मीदवारों को इसे सुलझाने के लिए निमंत्रित किया। जब वे भी राजा को संतुष्ट न कर सके तो स्वयं साधु को ही दरबार में बुलाने का अनुरोध किया।

''उसे पूरा विश्वास था कि जो कन्या के लिए सर्वोचित वर का चुनाव कर सकता है, वह उसके लिए सही सलाहकार का भी चुनाव कर सकता है। साधु ने पुनः स्वभावतः पहेली की भाषा में ही बात की। राजा इस बार उसके लिए तैयार था। जब साधु ने सच्चे रत्न की बात की तब उसका अभिप्राय मणिभद्र से था। इसलिए उसने तुरन्त मणिभद्र को अपना सलाहकार नियुक्त कर लिया।

''सभी दरबारियों ने तीनों युवकों को और साधु द्वारा उन्हें दी गई वस्तुओं को देखा था। किन्तु मणिभद्र के अलावा किसी ने उनका सावधानीपूर्वक निरीक्षण नहीं किया था। युवकों को दी गई तीनों चीजें सतही दृष्टि से समान रूप से महत्वपूर्ण लगती थीं वैसे ही जैसे तीनों युवक समान रूप से कन्या के योग्य वर लगते थे। लेकिन प्रत्येक वस्तु की जाँच करने पर उसे पता चला होगा कि जल और अनाज में कुछ दोष है। जल संभवतः खारा था और अनाज में भूसे का मिश्रण था। पर मिट्टी साफ और सोंधी होगी। इन्हीं प्रमाणों के आधार पर मणिभद्र ने आत्मविश्वास के साथ अपना निर्णय सुनाया होगा। इसलिए यथोचित ही उसे राजा का सलाहकार बनाया गया।''

राजा विक्रम का सही उत्तर सुनकर वेताल शव के साथ पुनः उड़कर पुराने वृक्ष पर चला गया। राजा विक्रम ने म्यान से तलवार निकाल ली और वेताल का पीछा किया।

भारतीय पर्व
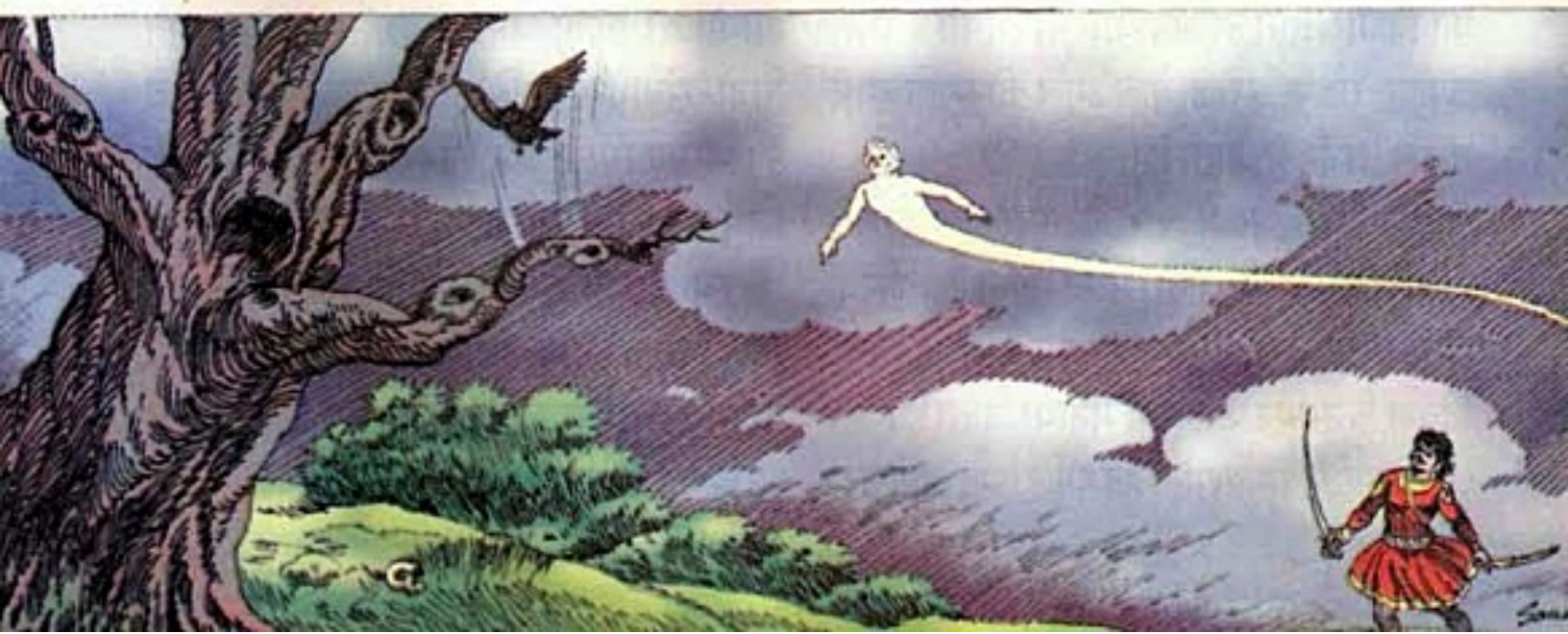
क्रिसमस

दिसम्बर का महीना आते ही 'जिंगल बेल्स...' की सुरीली ध्वनि से हवा गूंजने लगती है। क्रिसमस का विचार आते ही अनायास ही सान्ता क्लॉज, उपहार, रेंडियर, स्लेज़, केक आदि की स्मृति हमारे मन में ताजी हो जाती है।

पूरे विश्व भर में २५ दिसम्बर एक विशेष दिवस के रूप में जाना-माना जाता है। ईसाई धर्म के प्रवर्तक जीसस क्राइस्ट का यह जन्म दिवस क्रिसमस के रूप में मनाया जाता है।

क्रिसमस शुभकामना का पर्व है। यह हर्षोल्लास और आमोद-प्रमोद का दिवस है। भारत में सभी ईसाई इस पर्व को अपने-अपने क्षेत्र के रीति-रिवाज़ और परम्परा के अनुरूप मनाते हैं।

प्रत्येक घर को प्रकाश से सजाया जाता है। क्रिसमस वृक्ष को सितारों और बैलूनों से अलंकृत किया जाता है और घरों तथा दुकानों में रंगीन बन्दनवार लगाये जाते हैं। कुछ परिवार झोंपड़ी या नाँद सजाते हैं और ईसा के जन्म-दृश्य को गुड़ियों के साथ प्रदर्शित करते हैं।

प्रत्येक घर के सामने एक रंगीन सितारा लटकाया जाता है। गाँवों और छोटे शहरों में यह निर्धारित करने के लिए कि कौनसा सितारा सबसे अधिक ऊँचा है, प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं। दक्षिण भारत में लोग बाँस के चीरे हुए टुकड़ों से लैम्पशेड बनाकर उसमें बल्ब रख देते हैं और अपने दरवाजों पर लटका देते हैं।

क्रिसमस के अवसर पर भजन-गायक भजन गाते हुए हरेक पल्ली के घर-घर में जाते हैं।

क्रिसमस आगमन के पूर्व अर्द्धरात्रि में या बहुत सबेरे सभी गिरजा घरों में मॉस या क्रीस्ट-याग आयोजित किया जाता है। मॉस के बाद लोग मित्रों-संबंधियों से मिलते और उन्हें उपहार देते हैं। परिवार मिलन और शानदार उत्सव-भोज के साथ यह पर्व-समारोह समाप्त हो जाता है।

स्वादिष्ट केक के बिना क्रिसमस समारोह अपूर्ण रहता है। परम्परा के अनुसार पर्याप्त फल के साथ केक घर पर बनाया जाता है और घरेलू शराब का पुट दिया जाता है।

क्रिसमस वृक्ष बनाइये

प्रभु को धन्यवाद ! वर्ष का सबसे पवित्र और खुशी का दिन पुनः आ गया। उत्सव मनाने का, सच्चे हृदय से देने का और हर्षोल्लास के साथ पारस्परिक मेल-मिलाप का फिर समय आया। इस क्रिसमस को अपने नन्हें हाथों से बने हुए सुन्दर वृक्ष से अपने घरों को सजाइये। आपको सिर्फ एक कैंची और गम की एक शीशी चाहिए। नीचे लिखे निर्देश को पढ़ना न भूलें।

१. इस पृष्ठ को एक गत्ते पर चिपका दें और सभी आकृतियों को अलग-अलग काटें।

२. वृक्ष A में नीचे से और वृक्ष B में ऊपर से एक चीरा लगायें जैसा कि चित्र में दर्शाया गया है।

३. A वृक्ष का कटा हुआ टुकड़ा B वृक्ष के कटे हुए टुकड़े में डाल दें।

४. सितारे को वृक्ष के शीर्ष पर चिपका दें।

५. कैंडी स्टीक्स और रंगीन बॉल को अपनी इच्छा के अनुसार चिपका दें। चिपकाने के लिए गम का प्रयोग करें।

वाह ! अब एक रंगीन क्रिसमस वृक्ष तैयार है। है न? अब इसे शान से अपने शो केस में सजा दें।

ईद-उल-फ़ित्र

'ईद मुबारक हो' - ईद-उल-फ़ित्र के मौके पर यह अभिवादन प्रायः सुनने को मिलता है। मुस्लिम त्योहारों में रमजान की ईद को सर्वाधिक रंगीन और प्राणवन्त माना जाता है। यह त्योहार मुस्लिम माह रमज़ान के आखिर में आता है। इस पावन रमजान महीने में अमावस्या के ठीक दूसरे दिन ईद मनाई जाती है। इस वर्ष ईद का पर्व १७ दिसम्बर को मनाया जायेगा।

इस महीने में मुस्लिम भाई दिन भर उपवास रखते हैं। वे सूर्योदय होने से पहले खा लेते हैं और सूर्यास्त होने पर चंद्र-दर्शन के बाद ही उपवास तोड़ते हैं। वे दिन भर कुछ नहीं खाते और पानी भी नहीं पीते।

ईद के दिन सभी मित्र और संबंधी एक दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं। इस समुदाय के सभी लोग एक साथ मिलकर प्रार्थना करते हैं। प्रार्थना-सभा विशाल होने के कारण प्रार्थना खुले मैदान में की जाती है।

एक धार्मिक नेता काज़ी को जलूस में प्रार्थना-स्थल पर लाया जाता है, जो प्रार्थना के बाद उपदेश देता है। दोस्तों और रिश्तेदारों के साथ मेलमिलाप और दावत में दिन गुजर जाता है।

ईद के मौके पर सभी मुसलमान गरीबों को खैरात बाँटते हैं। फ़ित्र अथवा खैरात में वे गेहूँ या कोई अन्य अनाज, खजूर या अंगूर देते हैं। हरेक मुसलमान को प्रार्थना सभाके बाद खैरात जरूर देना चाहिए।

मुस्लिम का शिया सम्प्रदाय रमदान के पैगम्बर मुहम्मद साहेब के दामाद अली के शहीद दिवस पर शोक मनाते हैं।

विश्वास किया जाता है कि इसी महीने में पाक कुरान जन्नत से उतरा था। कहा जाता है कि इस पावन महीने की अंतिम दस रातों की इकली रातों में कुरान उद्घाटित किया गया था। इन रातों को 'लैलूत-उल-कद्र' अथवा शक्ति की रातों के रूप में मनाया जाता है। यह भी विश्वास किया जाता है कि केवल अल्लाह और पैगम्बर को ही पवित्र कुरान के रहस्योद्घाटन की ठीक-ठीक तारीख और समय मालूम था।

कार्तिकई

'कार्तिकई' तमिलनाडु में प्रकाश-पर्व के रूप में मनाया जाता है। यह पर्व तमिल महीना कार्तिकई में आता है जो उत्तर भारत के कार्तिक महीने के साथ मेल खाता है। इस बर्ष ३० नवम्बर को पड़नेवाला यह पर्व तीन दिनों तक मनाया जाता है।

यह पर्व भगवान शिव के सम्मान में मनाया जाता है, जिन्होंने, ऐसा बिश्वास किया जाता है, जीवन के पाँचों अनिवार्य तत्वों के रूप में तमिलनाडु के पाँच स्थानों पर अपने आपको अभिव्यक्त किया है।

तिरुवन्नामलय स्थित अरुणाचल के मंदिर में वे अग्नि के रूप में प्रकट हैं। प्रत्येक बर्ष कार्तिकई महीने के 'भरणी' नक्षत्र के दिन उस पहाड़ी पर दीप जलाया जाता है।

यह भी माना जाता है कि यह पर्व वर्षा ऋतु की बिदाई का सूचक है।

महीने के प्रथम दिवस के आरम्भ से ही महिलाएँ मिट्टी के छोटे दीप जलाकर चौखट पर रख देते हैं। और तिरुवन्नामलय में मनाये जानेवाले उस महान पर्व के दिन जब पर्वत की चोटी पर विशिष्ट दीप प्रज्वलित किया जाता है, तब प्रत्येक तमिल परिवार में विशेष पूजा की जाती है। मिट्टी के छोटे-छोटे दीप जलाकर पूरे घर में और चौखट पर सजाये जाते हैं।

प्रत्येक परिवार में पर्व के दिन प्रातःकाल चावल के आटे में गुड़ और घी मिलाकर उसके मिश्रण से छोटे-छोटे दीपक बनाये जाते हैं। इन दीपों को परिवार के इष्ट देव की बेदी पर प्रज्वलित किया जाता है। भगवान शिव की बन्दना गायी जाती है और पारम्परिक पूजा की जाती है। बच्चे दिवाली के बचे-खुचे पटाखे छोड़ते हैं।

दया का पुरस्कार

बहुत पहले महाराष्ट्र के एक छोटे ग्राम खेड़गाँव में संदीप नाम का एक भद्र बालक रहता था। वह सबका दुलारा था। लेकिन उसका पिता प्रायः उसे डाँटता रहता और कहता-''तुम्हारे जैसे नेत्रहीन बालक की परवरिश करने का क्या लाभ? तुम किसी काम के लायक तो हो नहीं ! अच्छा हो तुम कहीं बाहर जाकर भीख माँग कर गुज़ारा करो।'' एक दिन उसने सचमुच संदीप को घर से बाहर कर दिया।

संदीप एक नई अनजान दुनिया में अकेला निकल पड़ा। साथ में, विश्वास पात्र मोती के अतिरिक्त उसका कोई और सहारा न था। नटखट, हमेशा प्रफुल्लचित्त पिल्ला मोती और अन्धे किशोर की जोड़ी मनोहर थी। खेलते-गाते, पैसा और रोटी माँगते वे घर से बहुत दूर निकल गये। पता नहीं चला पाँच साल कैसे बीत गये।

एक दिन कड़ी धूप में चलते-चलने संदीप और मोती बहुत थक गये और एक मंदिर की सीढ़ियों पर लेट गये। ''आह ! मैं बहुत थक गया हूँ मोती। जरा आराम कर लें। फिर जो कुछ मिला है, बाँटकर खा लेंगे। मैं ऐसी जिन्दगी से तंग आ चुका हूँ। काश ! मैं उस संसार को देख पाता। तब सब कुछ कितना भिन्न होता।'' अपनी जिन्दगी पर पछताते हुए वह सो गया।

नींद में संदीप ने एक बिचित्र सपना देखा। एक सुंदर परी उसके पास आयी और बोली-''संदीप, संदीप, क्या तुम मुझे देख सकते हो?'' बेचारा संदीप ! उसने नींद में भी आह भरते हुए कहा, ''काश ! मैं तुम्हें देख पाता छोटी परी ! मैं तो अन्धा हूँ।''

परी ने मधुर मुस्कान के साथ कहा, ''दुखी मत हो, संदीप। मैं तुम्हें सहायता करने की कोशिश करती हूँ। जब-जब तुम एक अच्छा काम करोगे, थोड़ी रोशनी तुम्हारी आँखों में आ जायेगी और थोड़ा देखने लग जाओगे। लेकिन याद रखना। जब भी कोई बुरा कार्य करोगे, आँख की रोशनी चली
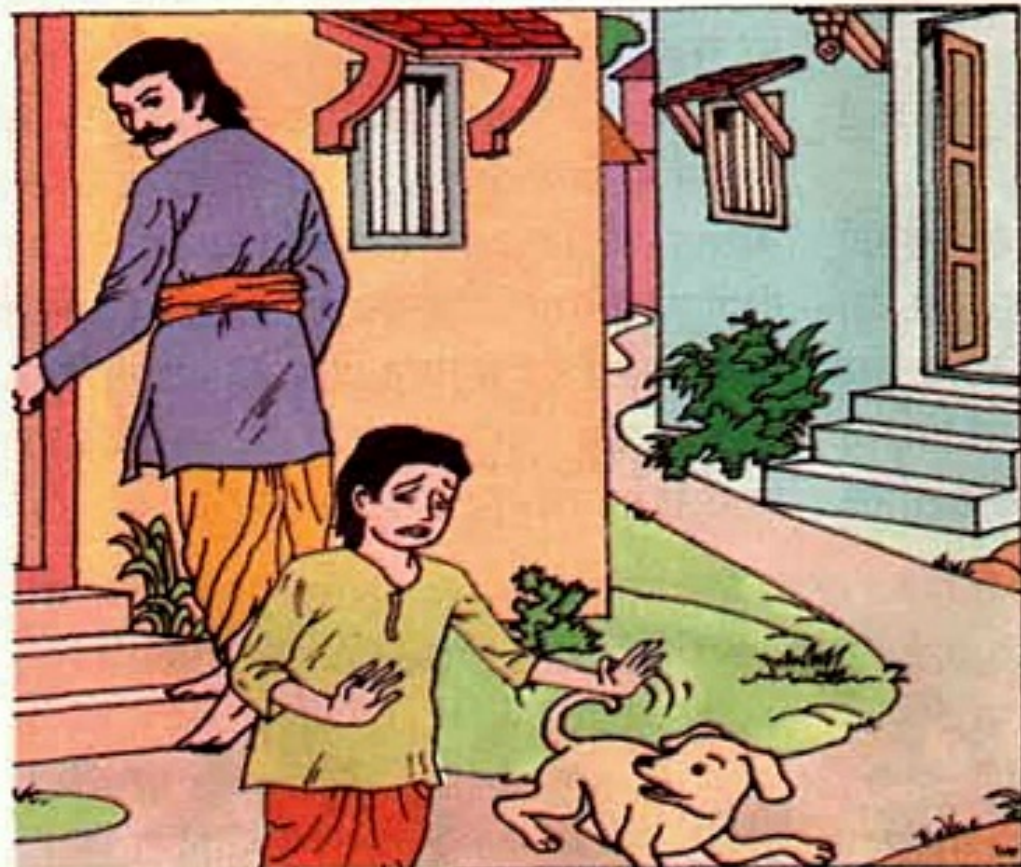
जायेगी और तुम पहले की अपेक्षा और अधिक अन्धे हो जाओगे।''

इतना कहकर परी अदृश्य हो गई। संदीप चौंककर उठ बैठा। उसे एक अद्‌भुत प्रसन्नता का अनुभव हुआ। उसने देखा कि मोती भी पहले से अधिक प्रसन्न है। ''चलो अब कुछ खाना खा लेते हैं और कल की प्रतीक्षा किये बिना अपना काम शुरू कर देते हैं।'' संदीप ने यह कहते हुए झोली से रोटी निकाली।

अगले दिन दोनों प्रफुल्ल मन से आगे चल पड़े। मार्ग में सड़क किनारे एक वृद्ध अंधा भिखारी चिल्ला रहा था-''इस बूढ़े गरीब को कोई पैसा दे दे बाबा।'' संदीप को उस पर दया आ गई। लेकिन उसने सहानुभूतिपूर्वक कहा, ''मैं भी तो गरीब और अंधा हूँ।''

''लेकिन तुम मेरे समान लंगड़े तो नहीं हो मेरे नन्हें।'' बूढ़े भिखारी ने कहा।

यह सुनते ही संदीप ने झट अपनी जेब से पिछले दिन भर की कमाई की कुल पूंजी एक रुपया निकाल कर बूढ़े भिखारी को दे दिया। वृद्ध ने काँपती आवाज़ में उसे धन्यवाद दिया। अचानक संदीप की आँखों में रोशनी की एक चमक कौंध गई। उसने आँखें बन्द करके फिर खोलीं और महसूस किया कि आँखों में अब उतना अंधेरा नहीं लगता जितना पहले था। उसने आश्चर्य और खुशी से एक आह ली। ''मोती ! सपना सच निकला। मैंने एक अच्छा कार्य किया इसलिए मेरा अंधकार थोड़ा कम हो गया।'' उसने खुशी और उत्तेजना में चिल्लाकर कहा। मोती भी खुशी से भौंकते हुए उसके चारों ओर उछलने लगा।

उसी रात इन दोनों की भेंट एक वृद्धा भिखारिन से हुई जो कई दिनों से भूखी थी। संदीप ने रात के लिए कुछ सूखी रोटियाँ बचाकर रखी थीं। उन्होंने निःसंकोच सब भूखी भिखारिन को दे दिया। संदीप को धन्यवाद देते समय बुढ़िया की आँखों में कृतज्ञता के आँसू छलक आये। संदीप की आँखों में पुनः एक चमक कौंध गई और उसका चेहरा खुशी से दमक हो उठा। ''क्या आज चाँदनी रात है?'' उसने वृद्धा से पूछा। जब उसने बताया कि आज तो पूर्णिमा की रात है तो संदीप आनन्द से झूम उठा। ''मैं अब काफी देख सकता हूँ।'' उसने मन ही मन सोचा।

अगले दिन सुबह जब संदीप और मोती उठे तो वे काफी भूखे थे। जैसे ही वे धूल भरी सड़क पर आगे बढ़े कि अचानक एक झोंपडी से एक
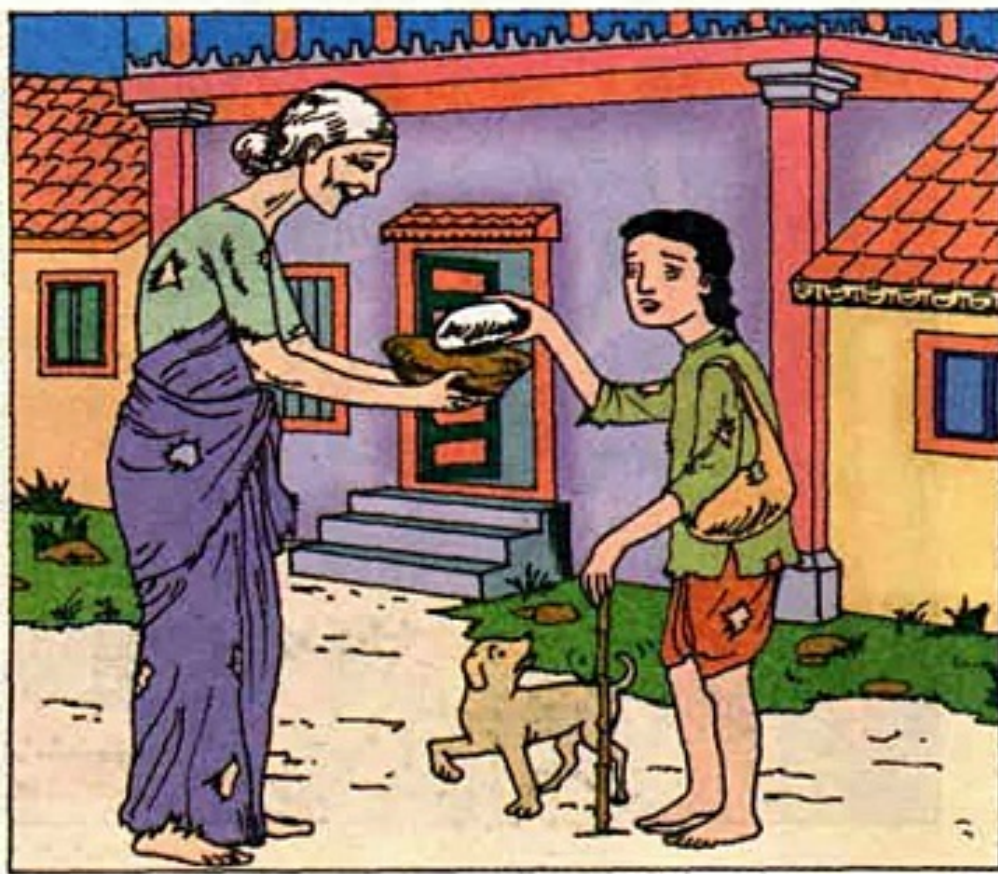
वहाँ एक आदमी से पूछताछ करने पर पता चला कि उसके गरीब भाई की एक मुर्गी कोई चोरी करके ले गया और वह बहुत दुखी हो रहा है। संदीप ने झट अपनी जेब से पैसे निकाल कर उस आदमी को देते हुए कहा, ''मोती ने आज सुबह उस मुर्गी को पकड़ लिया था। उसे बेचकर ये पैसे मिले हैं। कृपा करके इसे अपने भाई को दे देना। गलती के लिए क्षमा चाहते हैं।''

इतना कहकर वह वहाँ से चल पड़ा। तभी अचानक उसे आँखों के सामने पुनः ज्योति दिखाई पडी। भूख की छटपटाहट के बावजूद उसके चेहरे पर खुशी की चमक आ गई।

अगले कुछ सप्ताह अच्छे-अच्छे काम करने और साथ ही आँखों की ज्योति के क्रमशः सुधार में बीत गये। संदीप अब रात और दिन का अन्तर समझने लगा और वस्तुओं का आकार-प्रकार भी बताने लगा। यद्यपि उसे अब भी धुंधला दिखता था।

एक दिन जब वह मोती के साथ बात करते नदी के किनारे बैठा था कि अचानक किसी की सहायता के लिए पुकार सुनाई पड़ी। नदी की ओर से एक पुरुष की आवाज आ रही थी- ''बचाओ, बचाओ ! मैं डूब रहा हूँ।'' संदीप को पता न चला कि वह क्या करे। डूबते हुए व्यक्ति को एक अंधा कैसे बचा सकता है? तभी उसे मोती का ख्याल आया। मोती अच्छा तैराक था। लेकिन मोती डूब गया तो ! यह सोचकर उसका

मुर्गी चीं चीं करती हुई बाहर निकली। मोती उसके पीछे दौड़ा। कुछ ही देर में मुँह में मुर्गी को दबाए वह संदीप के पास लौट आया।

संदीप बड़ा खुश हुआ। ''सचमुच भाग्य ने आज साथ दिया। इसे बेचकर आज अच्छा खाना खायेंगे।'' संदीप ने सोचा और वह बाजार की ओर चल पड़ा।

मुर्गी के बदले मिले अच्छे खासे पैसों को देखकर वह प्रसन्न हो ही रहा था कि उसकी आँखों के सामने अंधेरा छाने लगा और वह पहले से भी अधिक अंधा हो गया। ''मोती ! मोती !'' वह चिल्ला पड़ा। ''मेरी आँखों की ज्योति फिर से चली गई। मैंने मुर्गी बेचकर बुरा किया, क्योंकि वह मेरी नहीं थी। चलो अपनी भूल का सुधार करते हैं।''

संदीप अपनी भूल पर पछताने लगा। वह उसी स्थान पर फिर गया जहाँ उसे मुर्गी मिली थी। उसे

कलेजा काँप गया। इसके अलावा इस दुनिया में मेरा है ही कौन?

तभी 'बचाओ, बचाओ' की आवाज़ फिर सुनाई पड़ी। पर इस बार संदीप ने कुछ नहीं सोचा। उसने झट मोती को आज्ञा दी-''मोती, जल्दी जाओ।'' मोती ने प्यार से उसका माथा चाटा और पूँछ हिलाई। फिर पानी में छलांग लगा दी।

थोड़ी ही देर में उसने धुंधली नजर से देखा कि एक व्यक्ति हाँफता और अपने को घसीटता किनारे पर आया। संदीप दौड़कर उसके पास गया और पूछा- ''क्या तुम सही-सलामत हो? मेरा मोती कहाँ है?''

''ओ मेरे बच्चे ! मोती ने मेरी जान तो बचा दी, किन्तु मैं उसकी रक्षा न सका।'' व्यक्ति हाँफता हुआ बोला।

''मोती ! मोती ! मेरा सच्चा विश्वासपात्र मित्र ! मैं तेरे बिना कैसे रहूँगा?'' संदीप रोने लगा।

''मत रो मेरे बच्चे। मुझे विश्वास है तुम्हारा पिता तुम्हारे लिए एक दूसरा पिल्ला ला देगा।'' व्यक्ति ने उसके कंधे पर हाथ रखकर उसे सान्त्वना देते हुए कहा।

''नहीं, नहीं, वह नहीं लायेगा। उसने मुझे पाँच वर्ष की उम्र में घर से निकाल दिया क्योंकि मैं अन्धा हूँ।'' संदीप ने सिसकियाँ लेते हुए कहा।

यह सुनकर व्यक्ति अचानक चौंकता हुआ पर धीरे से बोला, ''क्या तुम संदीप हो?''

संदीप ने ध्यान से उस व्यक्ति को देखा। यह उसका पिता था। अब वह सचमुच देख पा रहा था। दया के उसके अंतिम महान कार्य ने उसे अंधता से पूर्ण मुक्त कर दिया था। पिता ने पुत्र को खुशी, प्यार और पश्चाताप के मिश्रित भाव से देखा। ''मुझे बहुत अफसोस है, मेरे वत्स ! मुझे क्षमा कर दो और घर लौट चलो। मैं तुम्हारी आँखों की ज्योति के लिए सबकुछ करूँगा।'' उसने कहा। लेकिन उसे यह देखकर आश्चर्य हुआ कि उसका बेटा अब देख सकता है। उसने आनन्द के साथ

उत्तेजित होकर पूछा-''कैसे? यह सब कैसे हुआ?'' संदीप ने अपनी पूरी कहानी पिता को सुना दी। उसने अपने पिता को क्षमा कर दिया था। वे दोनों घर की ओर चल पड़े।

बाद में संदीप को 'मिनी' मिली। लेकिन फिर भी वह कभी अपने प्रिय मोती को कभी न भूल सका, क्योंकि उसी के कारण उसकी आँखों की ज्योति लौट आई थी।

वाग्विदग्ध - गोपाल भाँड़

गोपाल भाँड़ राजा कृष्णचन्द्र के दरबार में विदूषक था। एक दिन उसने राजा को बहुत उदास देखा। पूछने पर राजा ने बताया, ''यह फिर नवाब के ही कारण है।'' ''क्या आप अपने गोपाल को भी नहीं बतायेंगे? हो सकता है मैं कुछ कर सकूँ।'' गोपाल ने कारण बताने पर जोर दिया।

''नवाब चाहता है कि मैं धरती को एक किनारे से दूसरे किनारे तक नापूँ और साथ ही आकाश के सारे तारे गिनकर बताऊँ।'' ''आप के गोपाल के लिए कुछ भी असंभव नहीं है।'' विदूषक ने कहा। ''उससे एक लाख रुपये और एक साल का समय माँग लीजिए।''

राजा कृष्णचन्द्र नवाब के सामने आत्मविश्वास के साथ गये। ''तो तुम्हें एक लाख रुपये चाहिए? लेकिन काम पूरा करने के लिए एक साल का समय क्यों चाहिए?'' ''हुजूर, मैं धरती को तो दिन भर और रात में भी नाप सकता हूँ, लेकिन तारे तो सिर्फ रात में ही दिखाई देते हैं।'' राजा ने कहा।

गोपाल ने राजा को मुस्कुराते देखा। ''यह लो एक लाख रुपये। लेकिन क्या तुम सचमुच एक साल में यह काम कर सकोगे?'' राजा ने पूछा। ''आप चिन्ता न करें हुजूर।'' गोपाल ने आश्वासन दिया। ''मैं ठीक एक वर्ष के बाद वापस आऊँगा।''

गोपाल एक साल तक मजे में रहा। सबको इस बात का आश्चर्य था कि गोपाल दरबार में क्यों नहीं आ रहा है। ''ओह ! राजा ने मुझे एक विशेष कार्य भार सौंपा है। जब तक वह पूरा नहीं हो जाता, मुझे दरबार में जाने की जरूरत नहीं है।''
एक साल पूरा होने पर वह राजा के पास गया। ''काम पूरा हो गया हुजूर !'' गोपाल ने कहा। ''क्या तुमने धरती नाप ली और तारों की गिनती कर ली?'' राजा ने सन्देहपूर्वक पूछा। ''जी हाँ ! कल हम लोग नवाब के पास चलेंगे।''
एक शोभायात्रा नवाब के महल की ओर धीरे-धीरे चली। आगे-आगे राजा पालकी में पीछे से गोपाल भाँड़ पैदल, उसके पीछे महीन धागे के जाल से लदे दस बैल गाड़ियाँ और सबसे पीछे दस झबरे भेड़।
''यह गोपाल भाँड़ है जिसने मेरे बदले काम पूरा कियां है।'' राजा ने विदूषक का परिचय दिया। ''उत्तम ! अब आँकड़े बताओ।'' ''कौन से आँकड़े ?'' गोपाल ने बड़ी सरलता से कहा। ''धागे की लंबाई के बराबर पृथ्वी की परिधि है। और तारों की संख्या और भेड़ों के बालों की संख्या एक समान है। राजा और नवाब दोनों हक्के बक्के रह गये।

शास्त्रीय भारतीय नृत्य

अद्भुत मणिपुरी

मणिपुर यानी रत्नों के देश में नृत्य एक जीवन शैली है। ऐसा माना जाता है कि बहुत पहले यहाँ गन्धर्व रहते थे। सम्भवतः मणिपुर के वासियों को उन्हीं अलौकिक पूर्वजों से नृत्य उत्तराधिकार के रूप में मिला। मणिपुर के नृत्य उतने ही ललित और मनोहर हैं, जितना कि उत्तरपूर्वी भारत की पहाड़ियों में बसा स्वयं यह राज्य आकर्षक है।

मणिपुरी नृत्यों में चीनी प्रभाव का भी प्रमाण मिलता है। चीनियों ने इस घाटी पर ७०० ईसवी में आक्रमण किया था। वे वहाँ बस गये थे। स्थानीय वासियों के साथ उनके वैवाहिक संबंध होने के कारण भारतीय-मंगोल एक नई जाति का उद्भव हुआ।

यद्यपि यह नृत्य शैली बहुत प्राचीन है, लेकिन इसे शेष भारत में लोकप्रिय बनाने का कार्य बीसवीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों में बंगाल के राजकवि रबीन्द्रनाथ ठाकुर ने किया। जब उन्होंने इस नृत्य को १९२० में मच्छिमपुर में देखा तो इसके प्रेम में वे पागल हो गये।

उन्होंने इसे तुरंत शान्तिनिकेतन के ललित कला विभाग के पाठ्यक्रम में शामिल कर लिया।

मणिपुरी नृत्य की सभी शैलियाँ, चाहे वे लोकनृत्य हों या शास्त्रीय या आधुनिक, प्राकृतिक रूप से भक्तिभाव से भरी हैं। सर्वाधिक लोकप्रिय शैलियों में से एक है रास जो कृष्ण और राधा की प्रेम गाथा को प्रतिबिम्बित करती है।

मणिपुरी नृत्य एकल प्रदर्शन तक सीमित नहीं है। सामूहिक नृत्य भी हैं, जो प्रायः स्थानीय पर्वों जैसे डोल जात्रा या होली के अवसर पर प्रदर्शित किये जाते हैं। इन नृत्यों में लड़कियाँ और लड़के दोनों सक्रिय भाग लेते हैं।

रखौल नृत्य लड़कों के द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। यह कृष्ण के गोप-ग्वालों के साथ खेल को दर्शाता है। रंग बिरंगी वेशभूषा इस नृत्य की सुन्दरता और सूक्ष्म संचलन में चार चाँद लगा देती है। समवेत नृत्य लाई-हरोबा खम्भा-थोइबी के प्रेम का चित्रण करता है, जो लैला-मजनू और हीर-रांझा जैसी ही प्रेम गाथा है।

मणिपुर नृत्य, विशेषकर लड़कों द्वारा प्रदर्शित, कभी-कभी द्रुतताल में किये जाते हैं, जिनमें विषम कूद-फाँद और बैठकें सम्मिलित होती हैं। नर्तकों के पद-संचलन और खोल की ताल एक लय में रहते हैं।

नृत्य प्रायः सुरीले गान के साथ किये जाते हैं। सामान्य तौर पर प्रयुक्त होनेवाले वाद्ययंत्र हैं, सिम्बल, खोल और पेना जो एकतारा के समान तारयुक्त वाद्ययंत्र है। लय, ताल और स्वरक्रमों में काफी अन्तर होता है जो गतिमात्रा को क्रमशः बढ़ाते हुए मन्द स्वर से ऊँचे आरोह और धीमी लय से निष्पत्ति तक जाता है। मणिपुरी लड़के नृत्य करते समय कभी-कभी खोल और खंजनी या सिम्बल बजाते हैं।

उराँव जनजाति की एक कथा

उद्गम

उराँव जनजाति मध्य भारत के अनेक राज्यों में फैली हुई है। जैसे - बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ, झारखण्ड, उडीसा और महाराष्ट्र। ऐसा माना जाता है कि यह जनजाति कभी मूलतः दक्षिण के कोंकण समुद्री तट पर निवास करती थी। और हजारों वर्ष पूर्व बढती जनसंख्या के दबाव के कारण उन्हें उत्तर की ओर भागना पड़ा।

उराँव जनजाति को द्रविड जाति का एक प्रमुख प्रतिनिधि माना जाता है।

सियार का न्याय

एक उराँव युवक जीतू जंगल की घुमावदार पगडंडी से होता हुआ मधुर स्वर में गुनगुनाता नदी किनारे की ओर बढ़ रहा था। वह नदी के पार बस्ती में अपनी ससुराल जा रहा था। उसकी पत्नी करमी और छोटा बेटा पहले ही वहाँ जा चुके थे। अब वह वहाँ अपने साले के बेटे के छठी समारोह में शामिल होने जा रहा था। चलते-चलते उसकी नजर एक झाड़ी से दूसरी झाड़ी की ओर जाते हुए एक विशालकाय कछुए पर पड़ी।

''यम्म... स्वादिष्ट लगता है।'' जीतू ने सोचा और झट उस पर झपटा। उसे उठाने में उसे काफी प्रयास करना पड़ा। लेकिन शिकार श्रम के अनुकूल था। ''अब साथ ले जाने के लिए मेरे पास सौगात है, इसलिए वहाँ कुछ देर ठहरने में मुझे बुरा नहीं लगना चाहिए।'' उसने सोचा। शीघ्र ही वह नदी के किनारे पहुँच गया जो उसके गाँव उरावँ बस्ती की सीमा पर था। बस्ती सरना के सुन्दर जंगल से घिरा था। जीतू ने आगे बढ़ने से पहले सरना बुढ़िया को प्रणाम किया।

नदी को देखकर जीतू का दिल बैठ गया। नदी उमड़ रही थी और उसमें तेज भंवर पड़ रहे थे। ''मैं अब नदी के पार कैसे जाऊँगा?'' वह सोच में पड़ गया।

नदी अधिक गहरी नहीं थी और लोग प्रायः पैदल ही नदी पार करते थे। इसलिए आसपास कहीं नाव नहीं थी। उसके मन में एक विचार आया। उसने कछुए की ओर देखा। कछुए ने भी उसे घृणा की दृष्टि से घूरा।

जीतू ने बनावटी मित्र के भाव से कहा, ''अरे यार ! नदी में बाढ़ आ गई है और मैं पानी में पैदल चलकर इसे पार नहीं कर सकता। क्या मुझे उस पार छोड़ दोगे?''

कछुए ने जीतू का मजाक समझ लिया, ''ये मनुष्य क्षण भर में कैसे रंग बदलते हैं। वे विश्वास के लायक नहीं हैं। फिर भी, इससे बचने का यह अच्छा मौका है। इसके साथ सौदा कर लें।'' उसने सोचा।

उनकी भाषा

वे कुरुख भाषा बोलते हैं। किन्तु बहुत दिनों से वे आर्य और द्रविड़ भाषा-परिवार की अनेक बोलियों का प्रयोग करने लगे हैं। आजकल वे सदरी भाषा का भी प्रयोग करते हैं।

''ठीक है दोस्त, लेकिन बदले में कुछ देने का वादा करो। किनारे पर पहुँचने के बाद तुम मुझे मुक्त कर दोगे।'' कछुए ने कहा और जीतू की ओर ध्यान से देखा। कोई और विकल्प न देखकर जीतू ने शर्त मान ली।

''तुम्हारे जैसे बेकार जन्तु का भला मैं क्या करूँगा, तुम्हीं सोचो।'' उसने बेझिझक कहा। ''किनारे पर पहुँचते ही तुम अपना रास्ता नापो, मैं अपना।''

लोग

इस जनजाति के पुरुषों की ऊँचाई मध्यम, रंग काला और सिर पतला होता है। उनकी नाक चौड़ी और शरीर का गठन मजबूत होता है। स्त्रियों के चेहरे की बनावट में स्पष्टता और सुनम्य सौंदर्य होता है, जो नृत्य करते समय अच्छी तरह देखा जा सकता है।

उसके उत्तर से संतुष्ट होकर कछुआ नदी की उग्र जलराशि में प्रवेश कर गया और जीतू उसकी पीठ पर चढ़ गया। शीघ्र ही किनारा आ गया और जीतू उसकी पीठ पर से उतरा।

जब कछुआ नदी में वापस प्रवेश कर रहा था, तब जीतू ने उसके भारी-भरकम शरीर को हसरत भरी निगाह से देखा। "एक दिन मैं इस मोटू का माँस जरूर चखूँगा।" उसने निश्चय किया।

जीतू ने ससुराल में बहुत मौज किया। अपने सभी प्रिय व्यंजनों का आनन्द लिया - नमक-मिर्च के साथ तली हुई मछली और हरिया तथा महुआ का गैलन पर गैलन। अपने संबंधियों के साथ वह रात भर गाता-नाचता और आनन्द मनाता रहा और मन्दर तथा लोहटी नगेरा की अद्‌भुत आवाज पर थिरकता रहा। करमी और अन्य स्त्रियाँ नागरी मिट्टी के साथ नहाने के बाद अपने आभूषणों में अलंकृत शानदार लग रही थीं।

शीघ्र ही उसके गाँव लौटने का समय आ गया। उसकी पत्नी और बेटा कुछ दिन और रुकना चाहते थे। इसलिए जीतू अकेला ही घर लौट पड़ा। नदी किनारे की ओर जाते समय वह अपना प्रिय गीत ऊँचे स्वर में गाने लगा :

गर्मी में आग लगी जंगल में
पक्षी सब भागे
आषाढ़ बरखा, पत्ते नये आये
पक्षी लौट आये

नदी किनारे पहुँचने पर उसने देखा कि नदी का पानी अब भी उफान पर है। संयोगवश उसे उसी कछुए पर फिर नजर पड़ गई, जिसने पहले उसे नदी पार करने में सहायता की थी।

"ओह ! कितने सुखद आश्चर्य की बात है!" अपनी हँसी दबाते हुए जीतू ने कहा। "पृथ्वी कितनी छोटी है कि हम बार-बार मिल जाते हैं। है न?" जीतू ने कछुए के पास जाकर कहा।

कछुआ चौंक गया और पीछे मुड़कर धीरे से बोला, "हाँ, हाँ, सचमुच !"

"मैं समझता हूँ कि मुझे नदी के उस पार वापस ले जाने में तुम्हें कोई आपत्ति नहीं होगी।" जीतू ने कहा। जीतू को आश्चर्य हुआ कि इस बार कछुआ बिना किसी सवाल के राजी हो गया।

मनुष्य और पशु दोनों में से किसी ने भी नदी पार करते समय कोई बात नहीं की। लेकिन जैसे ही दोनों नदी के बीच में पहुँचे कि कछुआ ने पूछा, ''क्या सोच रहे हो?''

अब उरावँ लोगों का विश्वास है कि नदी पार करते समय झूठ नहीं बोलना चाहिए, क्योंकि ऐसा करने से वह डूब जाता है। इसलिए जीतू झूठ नहीं बोल सकता था। ''मैं यह सोच रहा था कि मैं तुम्हें घर ले जाऊँगा और तुम्हारे माँस का स्वाद चखूँगा; क्योंकि मैंने आज तुम्हें छोड़ देने का वादा नहीं किया है।

''यह सचमुच तुम्हारी कितनी नीचता है। मैं तुम्हारा इरादा समझ गया था। लेकिन मैं क्या सोच रहा था, क्या तुम जानना नहीं चाहोगे?'' कछुए ने फुफकारते हुए कहा।

''क्या सोच रहे थे भला?'' जीतू ने पूछा।

''मैं तुम्हें नदी में डुबाने जा रहा हूँ। मैंने आज उस पार तक पहुँचाने का वादा तो नहीं किया था ! नहीं किया था न?'' कछुए ने मुँहतोड़ जवाब दिया।

जीतू डर गया। ''नहीं, नहीं, कृपा करके ऐसा न करो।'' वह चिल्लाकर दया की भीख माँगने लगा।

''पर क्यों नहीं? तुम इसी के लायक हो, क्योंकि तुम्हारी नीयत में खोट है।'' कछुए ने कहा।

तभी जीतू की नज़र नदी के किनारे पर जहाँ उसका गाँव था, एक लेटे हुए सियार पर पड़ी। ''ठीक है, उस सियार से क्यों नहीं पूछ लेते कि तुम मुझे जाने दोगे या नहीं।'' उसने कछुए से

उनका पेशा

उरावँ जनजाति के लोग मूलतः किसान हैं। उन्हें भिन्न-भिन्न पौधों और जानवरों के रोगनाशक गुण तथा हानिकारक अवगुण की भी जानकारी है। उरावँ लोगों का दूसरा प्रमुख पेशा है शिकार करना। उनमेंसे कुछ खेती करते हैं और शिकार के लिए जाते हैं।

कहा। वह डर रहा था कि कहीं बचने का मौका मिलने से पहले ही कछुआ उसे डुबा न दे।

''बहुत अच्छा ! लेकिन उससे यह भी

पूछो कि तुम मुझे खा सकते हो कि नहीं।'' कछुए ने कहा।

सियार ने नदी के बीच में बहस करते हुए दो की कुछ आवाजें सुनीं।

''हे बुद्धिमान महोदय !'' जीतू और कछुए ने एक साथ पुकारा। सियार ने अपने कान खड़े किये और आदमी तथा कछुए की बात सुनने की कोशिश की। लेकिन उनका एक शब्द भी सुनाई न पड़ा। जीतू पूरा दम लगाकर चिल्ला रहा था, इसलिए सियार न सुनने का बहाना कर रहा होगा।

''मैं तुम्हें नहीं सुन पा रहा हूँ। क्या जरा और जोर से बोलोगे?'' सियार ने कहा। अब कछुए ने अपने विवाद का वर्णन किया।

''ओह नहीं। पता नहीं मेरे कान को क्या हो गया ? क्या जरा नजदीक आकर बताओगे?'' सियार ने बताया।

अब कछुआ तेजी से तैरता हुआ किनारे

उनकी धारणाएँ

उराँव लोग अन्य जनजातियों के समान भूतप्रेत, जादू टोना, वर्जनाओं, अनेक धार्मिक अनुष्ठानों तथा अन्ध विश्वासों में विश्वास रखते हैं। उनकी कुछ धारणाएँ इस प्रकार हैं :

❋ यदि शिकारी यह स्वप्न देखता है कि उसके घर में दुल्हन आई है तब उसे हिरण मारने में सफलता मिलेगी। यदि सपने में वह किसी पशु को मारता है तब उसकी अपनी मृत्यु हो सकती है।

❋ शिकारी को यदि खाली घड़े के साथ कोई स्त्री मिले तो बहुत अशुभ होता है। यदि पानी से भरे घड़े के साथ स्त्री मिले तो बहुत शुभ माना जाता है।

❋ सियार पर निशाना साधे गये तीर को या जिस तीर पर स्त्री का पाँव पड़ गया हो उसे बेकार माना जाता है।

पर आया। सियार अब भी उनकी आवाज नहीं सुन सका। उसने और निकट आने का उनसे अनुरोध किया। अब कछुआ एक दम किनारे पर था। जीतू विवाद के बारे में बताने के लिए अपना मुँह खोलने ही वाला था कि सियार ने उसे डपटते हुए कहा, ''अरे मूर्ख, सूखी जमीन पर जल्दी कूदो।''

जीतू कूदकर जमीन पर आ गया और अपने को सुरक्षित पाकर बहुत प्रसन्न हुआ।

''और तुम बेवकूफ ! किसका इन्तजार कर रहे हो? जल्दी से तैरकर पानी के अन्दर चले जाओ नहीं तो आदमी तुम्हें फिर पकड़ लेगा।'' सियार ने चिल्लाकर कछुए को सावधान किया।

कछुआ शीघ्र ही नदी में अदृश्य हो गया।

और बुद्धिमान सियार पुनः मीठी नींद लेने लगा।

शब्दावली

बस्ती : निवास स्थानों की कॉलोनी

छठी : बच्चे के जन्म का छठा दिन। इस दिन भेलुआ का पत्ता बच्चे के पास रखा जाता है। इसके स्पर्श से सूजन और दर्द हो जाता है। उराँव लोगों का विश्वास है कि बच्चे के पास इसका पत्ता रखने से पूरी उम्र उसे यह रोग नहीं होता।

सरना : साल वृक्ष।

हरिया : चावल की तेज शराब, जो घर में बनायी जाती है और विशेष अवसरों पर अतिथियों को दी जाती है।

महुआ : महुआ के सूखे फूलों से चुआई गई तेज शराब।

मन्दर : गंभार वृक्ष की धड से बनाया ढोल। यह मिट्टी का भी बना होता है।

लोहटी नगेरा : एक अन्य प्रकार का ढोल।

नागरी मिट्टी : काला दुमट जिसे उराँव साबुन की तरह प्रयोग में लाते हैं। यह बहुत मुलायम होती है और इसे शरीर तथा बाल को साफ करने में प्रयुक्त किया जाता है।

उबाले हुए अण्डे और पकाई हुई मटर

दो महीने गुजर गये थे। अज़ीज़ हर दिन आशा भरी निगाह से आकाश की ओर ताकता रहता। क्या बारिश होगी ? गाँव में हरेक की जुबान पर सही सवाल था। यदि बारिश नहीं हुई तो फसलों का क्या होगा? लेकिन इन्द्र देव ने किसी की प्रार्थना पर ध्यान नहीं दिया। सूरज बेदर्द हाकेर दहकता रहा। धरती तवे की तरह जलती रही। फसलें मुरझा कर मर गईं। गाँववाले निराश हो गये।

सबसे बुरा हाल बेचारे अज़ीज़ का था, जिसकी थोड़ी-सी जमीन थी पर सब जगह दरारें पड़ गई थीं। वह इतना घबरा गया कि उसने अपनी सारी जमीन बेच दी और बेहतर हरियाली की तलाश में घर से निकल पड़ा। ज़ाने से पूर्व उसने अपने गाँव के व्यापारी मीरचन्द से एक दर्जन उबले अण्डे उधार लिये और भारी मन के साथ शामको गाँव छोड़ दिया।

व्यापारी ने उबले अण्डे को खराब कर्ज समझकर बट्टे-खाते में डाल दिया। ''बेचारा !'' कोमलता के दुर्लभ क्षणों में उसके मन में यह भाव आया। ''अण्डे के पैसे भला वह कहाँ से देगा, जब उसके पास फूटी कौड़ी भी नहीं है ! चलो, इन अण्डों से कम से कम दस दिनों तक वह भूखा तो नहीं मरेगा।''
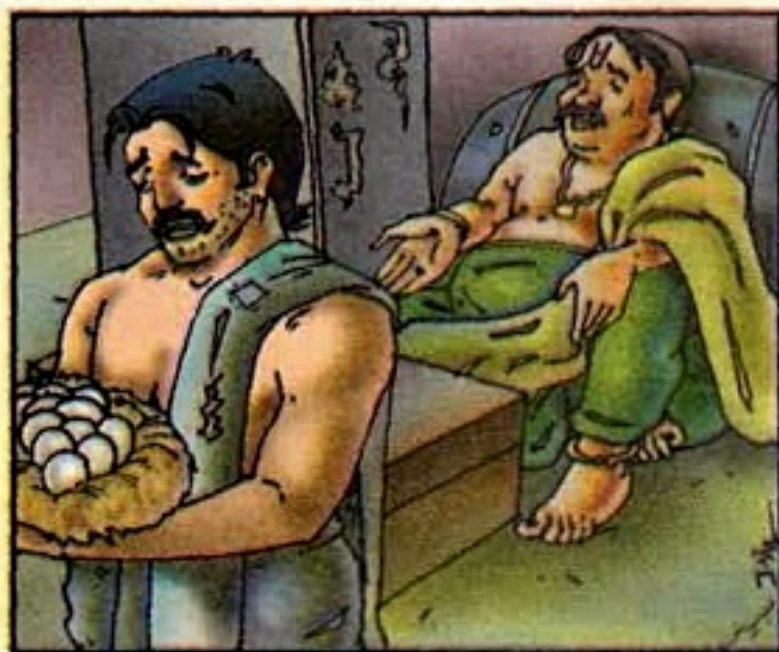
किन्तु अज़ीज़ भूखा कभी न मरा। वह जीवित रहा और सात सालों के बाद कहीं अधिक सही सलामत होकर लौटा। जब वह घोड़ा गाड़ियों की कतार के आगे-आगे एक खूबसूरत सफेद घोड़े पर सवार हो गाँव वापस आया तो मीरचन्द और गाँववाले देखते ही रह गये।

वह चाँदी और सोने के सिक्कों के लिए दो अलग-अलग रेशमी थैलियाँ रखने लगा और गाँव में काफी जायदाद बना ली : बंगला, कई एकड़ खेतीहर ज़मीन और फलों का बाग। गाँववालों को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं होता : इतनी दौलत कहाँ से लाया?

मीरचन्द अपने उबाले हुए अण्डों को नहीं भूला था। एक दिन वह अज़ीज़ के बंगले पर पहुँचा। शानदार पोशाक में सजा हुआ एक नौकर ने दरवाजा खोला। ''मैं अज़ीज़ से मिलना चाहता हूँ।''

नौकर उसे अन्दर ले जाते हुए उस पर ठी-ठी कर हँसा। लेकिन अज़ीज़ ने बड़े तपाक के साथ उसका स्वागत किया। मीरचन्द बिना किसी औपचारिकता के निःसंकोच बोला, ''अज़ीज़, क्या तुम्हें याद है, जब सात साल पहले तुमने गाँव छोड़ा था, तब मैंने तुम्हें एक दर्जन उबाले अण्डे उधार दिया था। तुम्हें उन अण्डों के लिए एक हजार अशर्फियाँ देनी हैं।''

''एक दर्जन अण्डों के लिए एक हजार अशर्फियाँ? आप मज़ाक कर रहे होंगे।'' अजीज को धक्का लगा। ''अण्डों के कर्ज के लिए मैं कृतज्ञ हूँ। मैं उनके लिए वाजिब दाम भी चुकाने को तैयार हूँ। पर हजार अशर्फियाँ तो बहुत ज्यादा हैं।''

''मैं इससे एक कौड़ी भी कम नहीं लूँगा।'' मीरचन्द ने ज़िद की। लेकिन अज़ीज़ अपनी बात पर अड़ा रहा। अन्त में मीरचन्द मुकदमा करने की धमकी देकर चला गया।

मीरचन्द ने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। मुकदमे की सुनवाई शुरू हुई और अज़ीज़ को कचहरी में बुलाया गया। लेकिन वह बहुत दिनों तक कचहरी में उपस्थित नहीं हुआ। मीरचन्द चिढ़ता और आग बबूला होता रहा। अंत में एक दिन दो घण्टे देर से पहुँचा।

जैसे ही मीरचन्द ने उसे देखा, आँखें लाल-पीली करके कहा, ''हुजूर, अब वह आया है, जिसने मेरा हक मार रखा है। यदि मैं इसे अण्डे नहीं देता तो उनसे कितने ही अच्छे-अच्छे चूजे निकलते और उनसे कितनी ही स्वस्थ मुर्गियाँ बनतीं और मेरा अण्डों का व्यापार अब तक कितना फलता-फूलता। लेकिन मैंने इसे कठिन समय में सहायता करने के लिए वे अण्डे दे दिये। अब वह उन अण्डों का दाम देने से इनकार करता है। उस पर इसकी ढिठाई यह कि वह मुकदमे की सुनवाई में देर से आया।''

जज क्रोधित होकर बोला, ''तुम पर धोखा देने का अपराध है और तुमने कचहरी के काम को रोका है। तुम्हें अपने पक्ष में क्या कहना है?''

''हुजूर ! विलम्ब के लिए क्षमा चाहता हूँ।''

क्षमा याचना की मुस्कान के साथ अज़ीज़ ने कहना शुरू किया। ''मैं अपने घर के पिछवाड़े में छोले बोने में व्यस्त था।''

''छोले बोने में? क्या अभिप्राय है तुम्हारा?'' जज समझ नहीं पाया।

''हुजूर, मेरे रसोइया ने आज मटर के दानों का छोले पकाया। अचानक मेरे मन में विचार आया कि क्यों न कुछ छोले को अपने पिछवाड़े में बो दें ताकि मटर की अच्छी फसल हो सके।

''तुम कितने बेवकूफ हो अज़ीज़ ! क्या तुम्हें यह नहीं मालूम कि छोले में पकाई हुई मटर से अंकुर नहीं आता और उनसे पौधे नहीं उगते।'' मीरचन्द ने अपनी हँसी दबाते हुए कहा।

''क्यों नहीं?'' अज़ीज़ ने सरलता से पूछा। ''यदि उबाले हुए अण्डों से चूजे निकल सकते हैं, तो पकाये हुए छोले से भी मटर के पौधे उग सकते हैं।''

मीरचन्द अवाक् रह गया। जज मुस्कुराया। अज़ीज़ ने मुकदमा जीत लिया था।

समाचार झलक

उम्र : १२,५००,०००,००० वर्ष

यह ब्रह्माण्ड की उम्र है। इसे विश्व भर के वैज्ञानिकों ने स्वीकार किया है। आह! तुम जानना चाहोगे कि वे इस निष्कर्ष पर कैसे पहुँचे। है न? ब्रह्माण्ड की उम्र निश्चित करने की योजना पर कार्य करनेवाले शोधकर्ताओं को एक अति प्राचीन नक्षत्र पर सक्रिय यूरेनियम की उपस्थिति का प्रमाण देखने को मिला। उन्होंने एक नई प्रविधि का प्रयोग किया जिसे ''रेडियो ऐक्टिव कॉस्मो-क्रोनोमेट्री'' कहते हैं। उन्हें यह पता चला कि जिन प्रविधियोंपर वे पहले निर्भर कर रहे थे उनकी अपेक्षा यह प्रविधि दोषरहित है। जिस नक्षत्र को अध्ययन के लिए उन्होंने चुना उसका नाम रखा गया है — सी.एस. ३१०८२-००१, जिसका सर्वेक्षण दक्षिण अमेरिका में, चाइल के पारानेल स्थान में एक विशाल दूरबीन की सहायता से किया गया। इस नक्षत्र पर यूरेनियम की उपस्थिति ने उन्हें ब्रह्माण्ड की उम्र निश्चित करने में सहायता की।

मंगल पर जीवन

हंगरी के वैज्ञानिकों ने दावा किया है कि मंगल ग्रह पर जीवन होने का स्पष्ट प्रमाण है। सभी कोणों से इस नक्षत्र के लिये गये साठ हजार फोटोग्राफ के अध्ययन के पश्चात वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे। उन्होंने मंगल के हिमाच्छादित दक्षिण गोलार्ध पर पृथ्वी के प्राणियों के समान हजारों पदचिह्नों का पता लगाया है।

अमेरिका का "जन्म"

सामान्य रूप से यह विश्वास किया जाता है कि क्रिस्टोफर कोलम्बस अमरीकी समुद्रतट पर - वास्तव में सेन सल्वाडोर - १४९२ में पहुँचा। क्या तुम्हें मालूम है कि 'अमेरिका' नाम सर्वप्रथम कब प्रयोग में आया? यह सन् १५०७ में बनाये गये एक मानचित्र पर लिखा गया। वेस्पुकी नामक एक खोजी ने सन् १५०१-०२ में नई दुनिया का भ्रमण किया और निश्चय किया कि यह एक अलग महादेश है। कार्टोग्राफर मार्टिन म्यूलर ने महादेश को अमेरिका के रूप में अंकित किया। इस मानचित्र को - जिसकी कोई प्रतिलिपि उपलब्ध नहीं है, अमेरिका में कांग्रेस की लाइब्रेरी ने अब एक करोड़ डालर में अपने पुरालेखागार के लिए खरीदा है।

लॉटरी का भाग्य

जर्मनी के फ्रैंकफर्त में एक पचास वर्षीय बेरोजगार महिला ने, जो पैसे उसे खाने के लिए मिले थे उससे पावरोटी खरीदने की बजाय पहली सितम्बर को एक लॉटरी टिकट खरीद लिया और एक करोड़ अमरीकी डॉलर का इनाम जीता। उसे लॉटरी टिकट की आदत नहीं है, लेकिन वह गरीबी से इतनी तंग आ गई कि उसने उस दिन भूखे रहकर अपनी किस्मत आजमाना बेहतर समझा। जो उसका अनुकरण करना चाहते हैं, वे शायद बड़ी मुसीबत में फँस जायें।

अपने भारत को जानो

प्रश्नोत्तरी

इस महीने में यह विविध है। देखो कितने उत्तर तुम्हारी उंगली के पोरों पर हैं? तो शुरू करें !

१. किस तारीख को भारत की जनसंख्या एक अरब हो गई ?

२. विश्व का सबसे ऊँचा शिखर एवरेस्ट नेपाल-तिब्बत सीमा में है। भारत का सर्वोच्च शिखर कौनसा है और उसकी ऊँचाई क्या है?

३. पाँच नदियों के कारण राज्य का नाम पंजाब पड़ा। वे नदियाँ कौनसी हैं?

४. पिछले वर्ष भारत में तीन नये राज्य बनाये गये। राजधानी के साथ उनके नाम बताओ।

५. स्वतंत्रता के बाद एक राज्य में दो महिला मुख्यमंत्री बनीं। किस राज्य में? वे दो मुख्यमंत्री कौन थीं?

(उत्तर अगले महीने)

अक्तूबर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. केरल में मनाया जानेवाला ओनम राजा महाबलि की वार्षिक यात्रा का प्रतीक है जो विष्णु के पाँचवें अवतार वामन द्वारा पाताल भेज दिये गये थे।

२. दिवाली १४ नवम्बर को।

३. विजयादशमी, नवरात्रि के एक दिन बाद, सरस्वती विद्या की देवी को निवेदित। बंगाली सरस्वती पूजा बसन्त पंचमी के दिन मनाते हैं।

४. रक्षा-बन्धन और भैया दूज।

५. खोरबाद-साल, जरुथुस्ट्र का जन्म दिन।

६. ईद। मिलाद-उन-नबी भी कहते हैं।

७. ईस्टर क्राइस्ट के क्रूस पर चढ़ाने के बाद उनके मृतोत्थान का स्मरणोत्सव है।

८. बुद्ध बैशाख पूर्णिमा को पैदा हुए थे। इसी दिन इन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ और निर्वाण भी मिला।

९. पोंगल।

१०. शबरीमाला पर्वत पर अयप्पा मंदिर, जहाँ भक्त जन कुछ क्षणों के लिए दूर आकाश में दिव्य प्रभामण्डल देख सकते हैं।

नवम्बर प्रश्नोत्तरी के उत्तर

१. ध्रुव - राजा उत्तानपाद

२. मार्कण्डेय - मृकण्डु

३. प्रह्लाद - विष्णु भगवान

४. नचिकेता - वाजश्रवा

५. एकलव्य - कौरव और पाण्डव

६. भरत - राजा दुष्यन्त

भारत की गाथा

एक महान सभ्यता की झाँकियाँ युगों-युगों से इसकी सत्य के लिए खोज

२३. सीता जिन्हें तुम नहीं जानते

संदीप की गूंजती हँसी और चमेली के किसी विषय पर तीक्ष्ण प्रतिवाद ने उनके दादा प्रोफेसर देवनाथ को सुखद आश्चर्य में डाल दिया। उन्हें याद नहीं कभी उन्होंने संदीप को इतना जोर से हँसते सुना हो।

हाथ में समाचार पत्र लिये, वे बरामदे में आये। उसी समय ड्राइंग रूम से उनकी बहू भी आ गई। ''शैतान कहीं के ! तुम केवल दूसरों की शांति भंग करना जानते हो।'' उन्होंने दबी जबान से बच्चों को डाँटा। उन्हें लगा कि उनके बच्चों ने प्रोफेसर के आराम में खलल डाल दिया। लेकिन जब उन्हें यह लगा कि उनके ससुर ने अपराह्न की नींद पूरी कर ली है और वे समाचार पत्र पढ़ रहे हैं तब उसकी चिंता दूर हो गई।

''बाबा, क्या मैं आपके लिए चाय आपके कमरे में रख दूँ?'' जयश्री ने पूछा।

''स्वागत है, लेकिन क्या पहले संदीप के कौतुक के कारण का पता लगाना नहीं चाहिए?'' अपने पोते की ओर अर्थ भरी दृष्टि से देखते हुए उत्सुक प्रोफेसर ने कहा।

''ग्रैंडपा, आपको यह सुनकर कैसा लगेगा कि बिजिंग में भारतीय ओलम्पिक दल का नेतृत्व करने के लिए मुझे चुना गया है? क्या आप अपनी हँसी रोक पायेंगे?''

- विश्वावसु -

भूमिका के लिए कुछ अन्यथा नहीं कहना है। फिर भी तुम्हारी जानकारी के लिए यह बता दूँ कि लक्ष्मी बाई स्वयं छोटी उम्र में भद्र, संकोची और कोमल थी। फिर जब अवसर की माँग हुई तो उसने बड़े कुशल ब्रिटिश सेनापतियों का दिल दहला दिया और इतिहास में देशभक्ति, बहादुरी और साहस का एक बहुत बड़ा दृष्टांत प्रस्तुत किया। लेकिन यह एक अन्य विषय है। जिस बात का मुझे दुख है वह है सीता के बारे में तुम्हारी राय। तुम उसे डरपोक कैसे कह सकते हो?''

जयश्री चाय की ट्रे लिये जानबूझकर बरामदे से होते हुए प्रोफेसर के कमरे में चली गई ताके वे पीछे-पीछे आ सकें। वे आये भी। संदीप और चमेली भी साथ चले गये।

''मैं निश्चित रूप से नहीं कह सकता। हो सकता है मैं तब अपने को नेशनल कुश्ती चैम्पियन घोषित करके दल में शामिल हो जाऊँ।'' अपनी हँसी दबाते हुए प्रोफेसर देवनाथ ने कहा।

''नाना साहेब की भूमिका में चमेली के दल में शामिल होना ज्यादा बेहतर होगा, क्योंकि स्कूल के स्वर्ण जयन्ती समारोह के अवसर पर आयोजित नाटक में झाँसी की वीरांगना रानी लक्ष्मीबाई की भूमिका उसी को दी गई है। हे भगवान ! झाँसी की रानी की भूमिका में चमेली ! भावुक और डरपोक कबूतरी ! सीता की भूमिका में शायद वह अधिक जँचती।'' संदीप ने कहा।

''मुझे प्यारी चमेली की क्षमता पर टीका-टिप्पणी नहीं करनी है अथवा गौरवमयी रानी की

''बाबा, सीता को दुर्भाग्यवश सदा डरपोक और संकोची - क्रूर परिस्थितियों के शिकार के रूप में दर्शाया जाता है।'' जयश्री ने टिप्पणी की।

''सच भी तो यही है।'' संदीप ने समर्थन किया।

''यह आम धारणा सच्चाई से बहुत दूर है। तुम सब बैठ जाओ तो मैं तुम सब से कुछ सवाल करूँगा। तब तुम या तो अपनी धारणा से चिपके रहो या उसे बदल लो, तुम्हारी मर्जी है। सबसे पहले, मैं समझता हूँ तुम सब जानते हो कि सिर्फ राम को वनवास के लिए जाना था, सीता को नहीं।''

''निस्सन्देह हम यह जानते हैं।'' जयश्री ने कहा। वह और उसके बच्चे बैठ चुके थे।

''अब बताओ कि सीता को वनवास के लिए

किसने कहा? क्या यह उसी का अपना निर्णय नहीं था, बावजूद इसके कि सभी बड़ों ने उसे जाने से रोका। क्या वह हठी की तरह अपने निश्चय पर अड़ी नहीं रही?''

प्रोफेसर उत्तर की प्रतीक्षा करते रहे। लेकिन कोई नहीं बोला। केवल जयश्री ने स्वयं मूल रामायण पढ़ी थी पर संदीप और चमेली को महाकाव्य का संक्षिप्त संस्करण पढ़वाया था। सबको कहानी अच्छी तरह मालूम थी।

प्रोफेसर ने आगे कहा, ''मेरे बच्चो ! अपने पूर्वाग्रहों से अलग होकर जरा घटनाओं की श्रृंखला पर ध्यान दो। जंगल में सीता ने ही स्वर्ण हिरन प्राप्त करना चाहा और राम को उसका पीछा करना पड़ा। फिर, जब हिरन के रूप में राक्षस ने राम की आवाज में धोखे से लक्ष्मण को पुकारा तब सीता ने ही लक्ष्मण को वहाँ शीघ्र जाने का आदेश दिया। जंगल में असुरक्षित अकेले रहने का निर्णय उनका अपना था। फिर उन्होंने ही अपनी इच्छा से, साधु के वेश में आये रावण को भिक्षा देने के लिए लक्ष्मण रेखा भंग की, जिसके कारण उनका अपहरण हुआ। क्या ये सब कायरता के लक्षण हैं? क्या उनमें दृढ़ संकल्प का अभाव था? बल्कि, क्या उन्हीं के संकल्प के कारण महत्वपूर्ण कालबिन्दुओं पर परिस्थितियों में मोड़ नहीं आ रहा था?''

''मैंने उस दृष्टिकोण से स्थिति पर नज़र नहीं डाली थी, मैं मानती हूँ।'' जयश्री ने मुस्कुराकर स्वीकार किया।

''बहुत धन्यवाद मम्मी; यदि तुमने ही तथ्य

को इस प्रकाश में नहीं देखा तो क्या ग्रैंड पा हमारे जैसे अज्ञानी प्राणियों को दोष दे सकते हैं?'' संदीप ने आँखें मिचकाकर कहा।

लेकिन प्रोफेसर की आँखें आधी बंद थीं; मानो वे किसी सुदूर देशकाल में भ्रमण कर रहे हों।

''जैसा तुम सब जानते हो, हनुमान ने, जिन्होंने रावण की अशोक वाटिका में सीता को ढूँढ निकाला, समुद्र पार राम के शिविर में सीता को वापस पहुँचाने के लिए अपनी सेवा निवेदित की थी। लेकिन सीता ने इस प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया। और उनके तर्कबिंदु पर ध्यान दो : ''रावण ने मेरा हरण किया। यदि राम का दूत भी यही करे तो दोनों में क्या फ़र्क है? राम को रावण को बध करके मुझे यहाँ से ले जाना चाहिए।'' क्या यह कायरता की पहचान है? करुणामयी

होने के कारण सीता को हनुमान की सुरक्षा का भी ध्यान था।

''अन्त में, जब युद्ध समाप्त हो गया, तब राम ने नहीं, बल्कि सीता ने ही अपनी अग्नि परीक्षा के लिए आदेश दिया। ऐसा था उनका व्यक्तित्व कि उनके संकल्प के अनुसार या जिसे वे कर्त्तव्य मानती थीं, उसके अनुकूल हरेक को कार्य करना पड़ता था।''

प्रोफेसर कुछ देर शांत भाव से बैठे रहे। उनके श्रोता भी। तब चमेली ने प्रोफेसर के हाथ से खाली कप लेते हुए कहा, ''ग्रैंडपा, रामायण के अंत में सीता ने दूसरी अग्नि-परीक्षा देने से क्यों इनकार कर दिया और उसके बदले पृथ्वी में समा गयी?''

''यह तुमने बहुत अच्छा प्रश्न पूछा है, मेरे बच्चे! पहली बार वे अपनी इच्छा से, अपने आदेश से अग्नि-परीक्षा के लिए गयीं। दूसरी बार दूसरों ने यह सलाह दी थी। दोनों परिस्थितियों में आकाश जमीन का अन्तर है। यह उनके लिए एक दम आवश्यक नहीं था कि वे पंचमेल भीड़ के समक्ष अपनी पवित्रता प्रमाणित करें। वे जानती थीं कि संसार अभी उनकी उपस्थिति के लिए योग्य पात्र नहीं है। मैं समझता हूँ तुम्हें स्मरण होगा कि वह मूलतः पृथ्वी से प्रकट हुई थीं। इसलिए पृथ्वी में वापस जाने का निर्णय उन्होंने लिया। उन्होंने अंधकार और अत्याचार की शक्तियों के प्रतीक रावण को नष्ट करने की राम को प्रेरणा देने के लिए अवतार लिया था। उन्होंने इसे पूरा किया। उनका उद्देश्य पूरा हो गया था। लेकिन राम को अब भी एक आदर्श राजा की मर्यादा स्थापित करनी थी, ताकि रामराज्य सबके लिए और सब काल के लिए एक दृष्टान्त बन जाये। लेकिन तुम्हें यह भी मालूम होना चाहिए कि महाकाव्य का अंतिम खण्ड उत्तर काण्ड वाल्मीकि की रचना नहीं है। मूल रामायण राम की अयोध्या में वापसी और उनके राज्याभिषेक के साथ समाप्त हो जाती है। अंतिम खण्ड किसी अन्य प्रतिभाशाली कवि की रचना है।'' प्रोफेसर ने निष्कर्ष देते हुए कहा।

देवी भागवत

त्वष्टृ प्रजापति सब देवताओं में से महान थे। उन्होंने घोर तपस्या की थी। वे इंद्र से द्वेष करते थे, अतः उन्होंने तीन सिरवाले विश्वरूप की सृष्टि की। विश्वरूप उम्र में बडा होता गया। अपने तीन सिरों से उसे अलग-अलग काम करते हुए देखकर मुनिगण उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा करते थे। वह एक मुँह से वेद-पठन करता था, एक और मुँह से ताडी पीता था। तीसरे मुँह से संसार में घटित होनेवाले सब विषयों को देखता रहता था।

विश्वरूप पंचाग्नियों के मध्य तपस्या करने लगा। एक ही पैर पर शीतकाल में पानी में, ग्रीष्मकाल में अग्नि के बीच खडे होकर बिना कुछ खाये-पिये तपस्या में लगा रहा। इंद्र ने जब यह सब कुछ देखा तो उसे लगा कि वह उसका पद हरने की तैयारी कर रहा है। उसने उसकी तपस्या को भंग करने का निश्चय किया। उसने अप्सराओं को भेजा। परंतु उनकी श्रृंगार चेष्टाओं ने वृत पर कोई प्रभाव नहीं डाला। वे लौटकर इंद्र के पास आ गयीं और कहा कि वृत की तपस्या को भंग करना उनके बस की बात नहीं है।

इंद्र ने महात्मा विश्वरूप का अंत कर देने का निर्णय लिया। उसने सोचा तक नहीं कि मैं कितना बडा पाप करने जा रहा हूँ। वह ऐरावत पर सवार होकर विश्वरूप के पास गया और उस पर उसने अपने वज्रायुध का प्रयोग किया।

त्वष्टृ को जब मालूम हुआ कि इंद्र ने उसके पुत्र की हत्या कर दी तो वह क्रोधित हो उठा।

उसने अथर्वण मंत्रों को उच्चारित करके अग्नि प्रज्वलित की जिसमें से प्रकाशमान होता हुआ एक पुत्र उत्पन्न होकर निकला। उसे देखकर त्वष्ट्र ने घोषणा की, ''तुम्हारा नाम वृत होगा। तुम्हारे अग्रज का बध इंद्र ने अपने वज्रायुध से किया। उस इंद्र का अंत करने के लिए ही तुम्हारा जन्म हुआ है। यह काम सुचारु रूप से करना।''

उसने वृत के लिए विविध प्रकार के हथियारों की सृष्टि की और उसके सुपुर्द किया। रथ भी दिया और सुमूहूर्त पर, ब्राह्मण आशीर्वाद सहित उसे इंद्र का बध करने के लिए भेजा।

जैसे ही मुनि, यक्ष तथा देवताओं ने सुना कि वृत इंद्र का संहार करने के लिए आ रहा है, वे घबरा गये। उन्हें भागते देखकर इंद्र ने अपने सेवकों को आज्ञा दी, ''रुद्रों, आदित्यों, वसुओं, दिक्पालकों को विमानों में बैठकर युद्ध करने आ जाने के लिए कहो।''

यों कहकर इंद्र ने बृहस्पति को भी अपने हाथी पर बिठा लिया और युद्ध करने निकला। उसके पीछे-पीछे हथियार लिये देवता भी निकल पड़े। वृत भी दानव सेना को अपने साथ लिये आया था। दोनों सेनाएँ मानस सरोवर के उत्तर में स्थित पर्वत पर भिड़ गयीं।

सौ सालों तक लगातार युद्ध होता रहा। इस वजह से समस्त लोकों को बाधित होना पड़ा। पहले वरुण भाग गया। फिर क्रमशः वायुगण, यम, कांतिहीन अग्नि एक-एक करके भाग गये। इंद्र को भी पलायन करना पड़ा। समस्त देवताओं पर विजय प्राप्त करने के बाद वृत पिता के पास आया, उन्हें प्रणाम किया और कहा, ''सबके सब भयभीत होकर भाग निकले। चूँकि वे भयभीत थे, इसलिए मैंने किसी को भी नहीं मारा। इंद्र दुम दबाकर भागने लगा तो उसके हाथी को पकड़कर ले आया हूँ। इसे आप भेंट के रूप में स्वीकार कीजिए। अब आगे क्या करना होगा, कृपया आदेश दीजिए। कोई भी कठिन कार्य करने सन्नद्ध हूँ।''

अपने पुत्र से बहुत ही संतुष्ट त्वष्ट्र ने कहा, ''पुत्र, तुम्हारा पराक्रम असमान है। अब गर्व से सिर उठाकर कहीं भी जा सकता हूँ। मेरी मनोवेदना का अंत हो गया और मेरा जीवन सफल हो गया। अब मुझमें कोई अशांति नहीं है। अब आगे तुम्हें क्या करना है, वह भी बताता हूँ।

सुनो, इंद्र का विश्वास किया नहीं जा सकता। वह बड़ा ही चालाक है, कुछ भी करने आगा-पीछा नहीं करेगा। ब्रह्मा की तपस्या करो। अमर बनो। फिर इंद्र का संहार करो। उस दुष्ट ने अकारण ही मेरे पुत्र को मार डाला, यह मुझसे भूला नहीं जा रहा है। उस इंद्र का अंत कर देने पर ही स्थायी रूप से मेरे मन को शांति मिलेगी।''

वृत ने पिता से अनुमति ली और क्रोध व आवेश भरित होकर गंधमादन पर्वत पर गया। गंगा में स्नान किया, सभी प्रकार के आहारों को त्यज दिया, योग पालन किया और ब्रह्मा की तपस्या में मग्न हो गया। मुनिगण भी उसकी घोर तपस्या की वाहवाही करने लगे। उसकी तपस्या से संतुष्ट ब्रह्मा प्रत्यक्ष हुए और कहा, ''अब तपस्या बंद करो। पूछो, तुम्हें क्या चाहिए।''

वृत ने हाथ जोड़कर ब्रह्मा से कहा, ''भगवन्, इंद्र पद पाकर मैं बहुत संतुष्ट हुआ। आज आपका दर्शन-भाग्य पाना उससे भी बडी बात है। धन्य हो गया हूँ। मेरा माँगा वर आप देना चाहते हों तो ऐसा वर दीजिए, जिससे मैं अमर बन जाऊँ। कोई लोहा, कोई लकडी, कोमल या कठोर कोई वस्तु, किन्हीं हथियारों से मैं मारा न जा सकूँ। युद्ध जैसे-जैसे तीव्र होता जाता है, वैसे-वैसे मेरी शक्ति बढ़ती जाए। ऐसा वर दीजिए।''

ब्रह्मा ने उसका माँगा वर दिया और वापस चले गये।

वृत बड़े आनंद के साथ अपने पिता के पास लौट आया और जो भी हुआ, सविस्तार बताया।
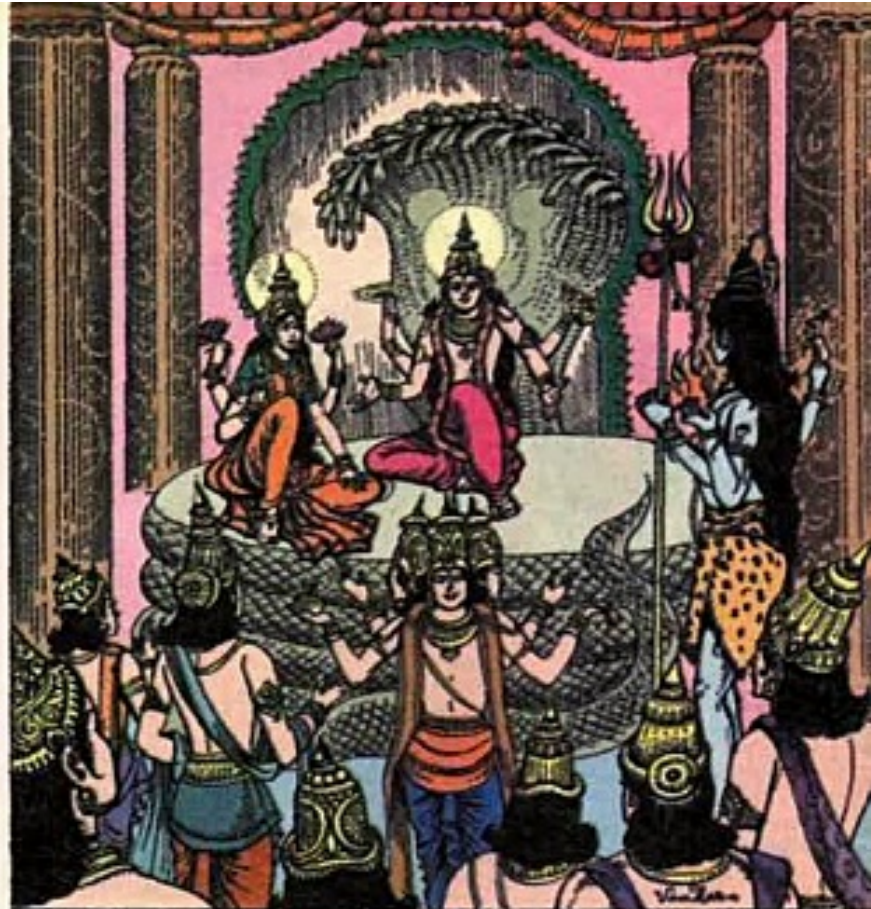
''पुत्र, तुम्हारा शुभ ही शुभ हो। तुम्हारे अग्रज विश्वरूप का बध करनेवाले उस दुष्ट पापी इंद्र का बध अब निरांटक कर सकते हो। निर्भय होकर आगे बढ़ो।''

अपने पिता की आज्ञा के अनुसार इंद्र का बध करने वृत रथ में बैठ गया और बडी सेना को लेकर युद्ध करने निकल पडा। इंद्र फिर एक और बार वृत से युद्ध करने तैयार हो गया।

इंद्र और वृत में घमासान लडाई हुई। दीर्घकाल तक युद्ध चलता रहा। इंद्र पराजित हो गया और अनाथ हो गया। वृत ने अमरावती पहुँचकर वहाँ की समस्त संपदाओं को अपने अधीन कर लिया।

अपने बेटे को स्वर्ग का राजा बना देखकर त्वष्ट्र बहुत आनंदित हुआ। देवता भागकर, अनाथ होकर यहाँ-वहाँ बसने लगे। देवनगरी

अब राक्षस नगरी बन गयी।

देवताओं ने शिव से अपनी दुस्थिति बतायी। उन्होंने कहा, ''हम आपकी शरण में आये हैं। हमें बचा लीजिए।''

शिव ने सामान्य रूप से देवताओं से कहा, ''हम ब्रह्मा को साथ लेकर विष्णु के पास जायेंगे। वे ही वृत को मार सकने की शक्ति रखते हैं।''

सब मिलकर वैकुंठ गये। विष्णु ने उन्हें देखकर पूछा, ''सब मिलकर यहाँ आये हो। क्या बात है?''

देवताओं ने अपने कष्टों के विषय में सविस्तार बताया। तब विष्णु ने उनसे यों कहा, ''तुमपर जो गुजरा, उसे मैं जानता हूँ। वृत और इंद्र में मैत्री बढ़ाइये। वज्रायुध को लिए मैं अदृश्य रहूँगा और तुम्हारी सहायता करूँगा। समस्त इच्छाओं की पूर्ति करनेवाली जगन्माता की प्रार्थना करोगे तो वह अपनी योगमाया से तुम लोगों की सहायता करेगी। उसकी माया के अधीन होकर वृत, इंद्र के हाथों मारा जायेगा। तुम लोग ही उनकी सहायता से वृत को मारो।''

देवता कल्पवृक्षों से भरे मेरु पर्वत पर गये। वहाँ उन्होंने महादेवी का ध्यान किया। महादेवी से पूर्व प्राप्त सहायता का विवरण देते हुए उन्होंने कहा, ''आप ने पहले भी महिषासुर, शुंभ निशुंभ तथा अन्य राक्षसों को मारकर हमारी सहायता की। माते, यह वृत भी पहले ही से आपका शत्रु रहा होगा। नहीं तो आपके हम भक्तों पर ऐसी हिंसा क्यों करता?''

उनकी स्तुति से प्रसन्न होकर देवी आभूषणों, तीन नेत्रों, चार हाथों और दिव्य आयुधों को लिये, रंग-बिरंगे वस्त्रों को पहने उनके सामने प्रत्यक्ष हुई और उन्हें सहायता पहुँचाने का वचन देकर अंतर्धान हो गयीं। देवता भी तृप्त होकर लौटे। फिर उन्होंने वृत और इंद्र के बीच मैत्री की स्थापना के लिए मुनियों को वृत के पास भेजा।

वृत के पास आकर मुनियों ने यों कहा :

''वृत, तुम अवश्य ही बहुत ही योग्य व्यक्ति हो। इंद्र भी महान माना जाता है। ऐसी स्थिति में तुम दोनों के संबंध मैत्रीपूर्ण हों तो सोने में सुहागा हो जायेगा। तुमसे मैत्री का वचन देगा इंद्र। तुम भी ऐसा ही करो। मुनि हम तुम दोनों के मध्यस्थ रहेंगे।''

वृत ने कहा, ''आपके प्रति मेरी असीम श्रद्धा

है। आपकी इच्छा को मैं इनकार नहीं कर सकता। पर पापी व ब्रह्महत्यारे इंद्र का कैसे विश्वास कर सकता हूँ?''

मुनियों ने कहा, ''पापी अवश्य अपने पाप की सज़ा भुगतेंगे। ब्रह्महत्या व ताड़ी पीने के अपराध के लिए प्रायश्चित्त के उपाय हैं। पर मैत्री द्रोह के लिए कोई भी प्रायश्चित्त नहीं है। अतः इंद्र और तुम सचमुच ही मैत्री के बंधन में बंध सकते हो।''

''भीगी हुई या सूखी हुई वस्तु से, पत्थर से या लकड़ी से, दिन में या रात में देवता व उनके अधिपति इंद्र को मुझे मारना नहीं चाहिए। आपको इसमें कोई एतराज़ न हो तो अवश्य ही हम दोनों मित्र बन सकते हैं।'' वृत ने कहा।

मुनियों ने इंद्र से ये सारी बातें बतायीं तो उसने शर्तें मान लीं। इंद्र ने अग्नि को साक्षी बनाकर जब वचन दिया तब वृत ने इंद्र से दोस्ती कर ली।

दोनों स्नेहपूर्वक मिले और एक साथ घूमते रहे। समुद्र तट पर और नंदनवन में विचरण करते रहे। अब वृत को इन्द्र पर विश्वास हो गया। परंतु इंद्र, वृत को मार डालने की ताक़ में था।

एक दिन शाम को इंद्र और वृत समुद्र तट पर घूम रहे थे। वह न तो रात थी, न दिन था। अलावा इसके वृत अकेला था। इंद्र को लगा कि वृत को मार डालने का यही सही समय है। उसने विष्णु का ध्यान किया। विष्णु आये और अदृश्य होकर वज्रायुध में प्रवेश कर गये। इंद्र ने समुद्र का झाग देखा। न तो वह गीला था, न ही सूखा। वह किसी प्रकार का हथियार भी नहीं है। इंद्र ने मन ही मन देवी का ध्यान किया। देवी ने अपना अंश उस झाग में मिलाया। इंद्र ने अपने वज्रायुध को झाग से ढक दिया और वृत पर ज़ोर से फेंका। उस चोट से वृत धराशायी हो गया और वहीं का वहीं मर गया।

शत्रु भय से मुक्त होकर इंद्र अमरावती लौट आया। मुनियों के स्तोत्रों के पठन के बीच महादेवी का उत्सव मनाया गया। नंदनोद्यान में देवी का एक अतिरम्य मंदिर बना और उसमें देवी की मूर्ति की प्रतिष्ठापना की गई।

(समाप्त)
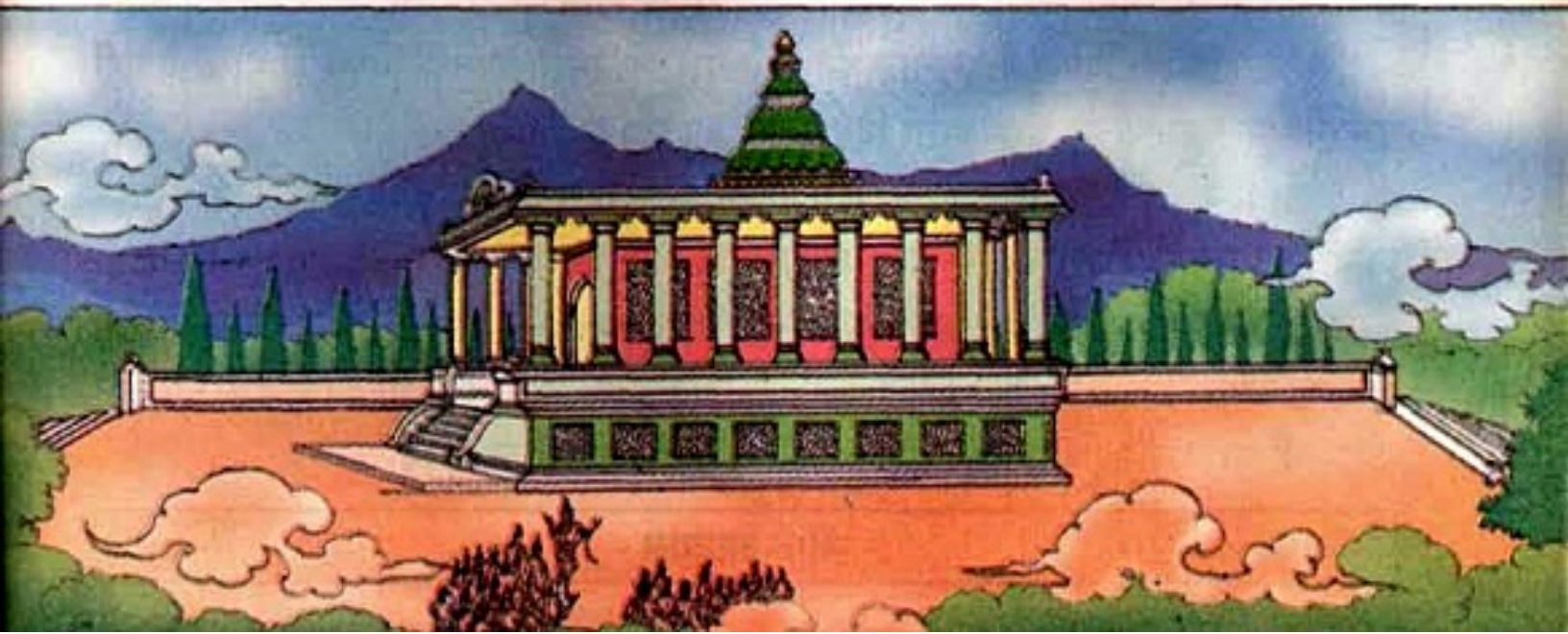
एकता

सुकर्म नामक एक महात्मा अपने शिष्य सुहस्त्र के साथ देश में पर्यटन कर रहा था। सूर्यास्त के समय वे दोनों निरंजनवर नामक एक गाँव में पहुँचे। उस रात को वहीं ठहर जाने के उद्देश्य से वे एक सराय में गये।

जब गुरु-शिष्य सराय पहुँचे तब अंदर से उन्होंने कुछ शोरगुल सुना। एक बलिष्ठ आदमी बारह साल के एक लड़के को पकड़कर बेंत से पीट रहा था। अंदर झांककर दोनों ने यह दृश्य देखा तो उन्हें बड़ा दुख हुआ।

फिर उन्होंने इस विषय में पूछताछ की तो उन्हें मालूम हुआ कि वह लड़का उस दिन तक उसके घर में काम कर रहा था। उस घर में काम करना उस लड़के को पसंद नहीं था। वह घर उसे नरक लग रहा था, इसलिए बिना किसी से कहे वह घर से भाग आया था। उसका अपना कोई नहीं था, इसलिए सराय में रहने वहाँ आ गया। उस बलिष्ठ आदमी ने उस लड़के पर आरोप लगाया कि उसी ने उसके एक क़ीमती हार की चोरी की।

सराय में आकर इसी अपराध के लिए वह उसे पीटने लगा। लड़का चिल्ला-चिल्लाकर बता रहा था कि मैंने यह चोरी नहीं की। मुझे फिर से अपने घर में काम पर लगाने के लिए उसने यह षड्यंत्र रचा।

लड़के को इस प्रकार अंधाधुंध मारता हुआ देखकर सराय में ठहरे लोगों को बहुत बुरा लगा। पर उसकी रक्षा करने के लिए कोई भी आगे नहीं आ रहा था।

लड़के से यह पीड़ा सही नहीं गयी। उसने कोई और उपाय न पाकर गंगा नामक एक आदमी के पैर पकड़ लिये और अपने को बचाने के लिए गिड़गिड़ाने लगा। गंगा भी काफ़ी हृष्ट-पुष्ट और बहुत लंबा-चौड़ा था।

- कीर्ति अग्रवाल -

पर गंगा ने लड़के की एक न सुनी। बड़ी ही लापरवाही से उसे धकेल दिया और कहने लगा, ''मुझे क्या पड़ी है तुम्हें बचाने की। यह मेरा काम नहीं। चाहो तो पुलिस से फरियाद करो।''

पुराणिक नामक एक दुबला-पतला व्यक्ति यह सब देख रहा था। उसमें रोष भर आया और बलिष्ठ से कहने लगा, ''यह कैसा अन्याय है। अगर सचमुच ही तुम्हारा हार खो गया हो तो जाओ और पुलिस से शिकायत करो। क्या इस लड़के को तुमने जानवर समझ रखा है जो यों पीटे जा रहे हो? उसे छोड़ दो।''

बलिष्ठ व्यक्ति ने पुराणिक की ओर घूरकर देखा और कहा, ''अरे दुबले, क्या जीने का इरादा नहीं है?'' कहते हुए उसने उसे धक्का दिया। पुराणिक वहाँ इकट्ठे लोगों पर जा गिरा।

फिर भी पुराणिक लोगों से बच्चे को बचाने के लिए गिड़गिडाने लगा। कोई भी उसकी मदद करने आगे नहीं आया।

आखिर गुरु-शिष्य के प्रोत्साहन पर सराय के मालिक ने हस्तक्षेप किया और पुलिसवाले को बुलवाया। फिर उस बलिष्ठ व्यक्ति को व उस लड़के को उसके हवाले किया। तब तक अंधेरा छा चुका था। गुरु-शिष्य उस रात को वहीं रह गये और दूसरे दिन सबेरे निकल पड़े।

बीच रास्ते में शिष्य सुहस्र ने अपने गुरु से पूछा, ''गुरुजी, रात को सराय में घटी घटना ने मुझे बहुत दुखी कर दिया। एक दृढकाय व्यक्ति उस छोटे लड़के को पीटता जा रहा था और वहाँ उपस्थित सभी लोग मौन खड़े थे। कोई भी उसे बचाने आगे नहीं आया। सचमुच ही उनका स्वभाव कितना निकृष्ट है ?''

महात्मा ने कहा, ''पहली-पहली बार तुमने ऐसा दृश्य देखा है। इसीलिए तुम इतने चिंतित हो रहे हो। कभी किसी आदमी की ज़िन्दगी में कोई घटना घटती है तब वह व्यक्ति उससे कैसे स्पंदित होता है, इससे उस व्यक्ति के व्यक्तित्व के बारे में अंदाज़ा लगाया जा सकता है। हर एक को इसका भय लगा रहता है कि कहीं यह आफ़त मुझ पर न आ गिरे। इसका मूल कारण एकता का अभाव है। गंगा में उस बलिष्ठ आदमी का सामना करने की शक्ति है। वह चाहे तो लड़के की रक्षा कर सकता है, उस बलिष्ठ आदमी से लड़के को छुड़ा सकता है, पर उस घटना का उसपर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, क्योंकि उसमें स्पंदन करनेवाला मन नहीं, मानवता नहीं है। पुराणिक में मानवता कूट-कूटकर भरी हुई है, बच्चे को बचाने की तड़प है, पर उसमें शारीरिक शक्ति नहीं है। वहाँ जो लोग हैं, सब मिल जाएँ, एक हो जाएँ, शक्ति आप ही आप उत्पन्न होगी। पर दुर्भाग्य की बात है, वे सब एक नहीं होंगे।''

''गुरुजी, इसका क्या कोई उपाय नहीं?'' शिष्य ने पूछा॥

महात्मा ने मुस्कुराते हुए कहा, ''क्यों नहीं ? इसका उपाय है। मेरी बात ध्यान से सुनो।

बहुत पहले दस लोग काशी की यात्रा करने गये। रास्ते में तीन लुटेरों ने उन्हें रोका-टोका। चाकू दिखाकर उन्हें डराया-धमकाया। वे उन सबको अपने सरदार के पास ले जाने लगे। यात्रियों में से एक बुद्धिमान ने स्थिति भांपी और गाना गाने लगा। चोरों ने सोचा, गाना ही तो गा रहा है, गाने दो। इससे हमारा क्या जाता है! इस गीत में वह बुद्धिमान बता रहा था कि तीन-तीन नौ होते हैं। शेष यात्रियों ने गीत में निहित अंतरार्थ को अच्छी तरह समझ लिया। फिर क्या था तीन-तीन यात्रियों ने एक-एक चोर को कसकर पकड़ लिया। दसवें यात्री ने लुटेरों के हाथों से चाकू छीन लिये और जंगली लताओं से उनके हाथ-पैर बांध दिये। इसी प्रकार अच्छे लोगों को, ज्ञानियों को, मानवता में विश्वास रखनेवालों को चाहिए कि वे मनुष्यों में सुषुप्त चेतना को जगायें और उनके मार्गदर्शक बनें।''

सुहस्र के संदेह की निवृत्ति हो गयी। वह चुपचाप गुरु के पीछे-पीछे चलने लगा।
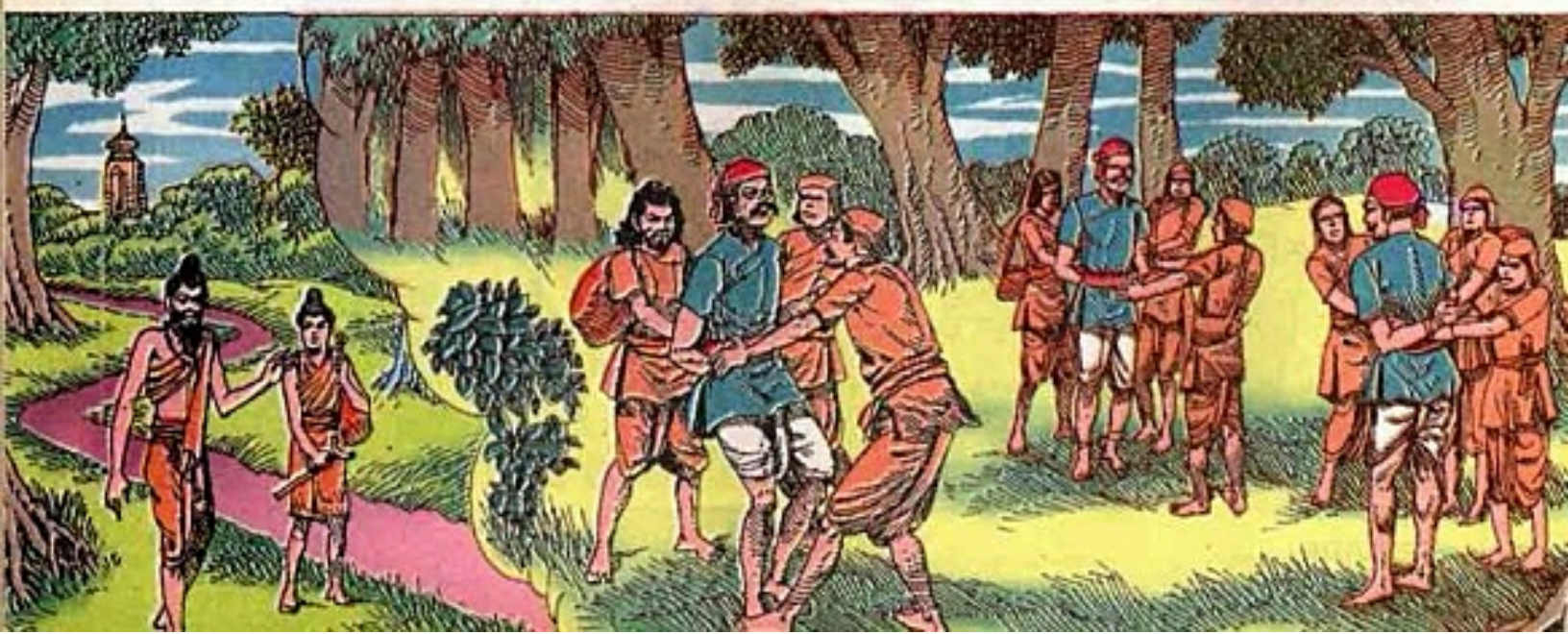
सुंदरी की होशियारी

एक गाँव में सुंदरी और कमल नामक दंपति रहा करते थे। खपरैल का उनका एक छोटा-सा घर था और थोड़ी-सी खेती थी। इसके अलावा, उनके पास कुछ भी नहीं था। कमल अव्वल दर्जे का सुस्त था। घर का कोई कामकाज नहीं करता था। पारिवारिक झंझटों से उसे कुछ लेना-देना नहीं था। सुंदरी होशियार थी, इसलिए अपने परिवार को जैसे भी हो, संभाल रही थी।

कमल ने एक दिन पत्नी से कहा, ''त्यौहार आनेवाला है। घर की दीवारें पुरानी पड़ गयी हैं। हो सकता है, त्यौहार के दिन कुछ रिश्तेदार हमारे घर आ जाएँ। घर की इस हालत को देखकर उन्हें शायद अच्छा नहीं लगेगा। आज ही तीन-चार मज़दूरों को बुलाकर चूना पुतवायेंगे।''

इस बात पर सुंदरी नाराज़ हो उठी और कहने लगी, ''खंभों की तरह हम यहाँ दो हैं। दोनों मिलकर यह काम स्वयं कर सकते हैं। मज़दूरों को बुलाने पर मज़दूरी देनी पड़ेगी। ऊपर से वे बहुत-सा चूना बेकार कर देंगे। मैं अच्छी तरह से जानती हूँ कि एक बूंद भी व्यर्थ किये बिना चूना कैसे पोता जा सकता है। जाना और पड़ोसिन गौरी से निसेनी ले आना। इतने में मैं चूना पानी में मिलाती हूँ।''

अब कमल को इस बात का अफ़सोस होने लगा कि मैंने बेकार क्यों चूने की बात उठायी।वह अपने आप पर खीझता हुआ वहाँ से चला गया। वह सीधे अपनी बहन कमला के घर गया।

कमला के सास-ससुर काफ़ी संपन्न थे। कमला थोड़ी-बहुत काली थी। इसको लेकर उसकी सास ताने मारती रहती थी कि बहू काली हो तो उसका पूरा मायका भी काला होता है। कभी-कभी सास और बहू आपस में लड़ती-झगड़ती भी थीं। ऐसा होने पर कमला अपने भाई के घर चली आती थी। फिर उसका पति

- निर्मला देवी -
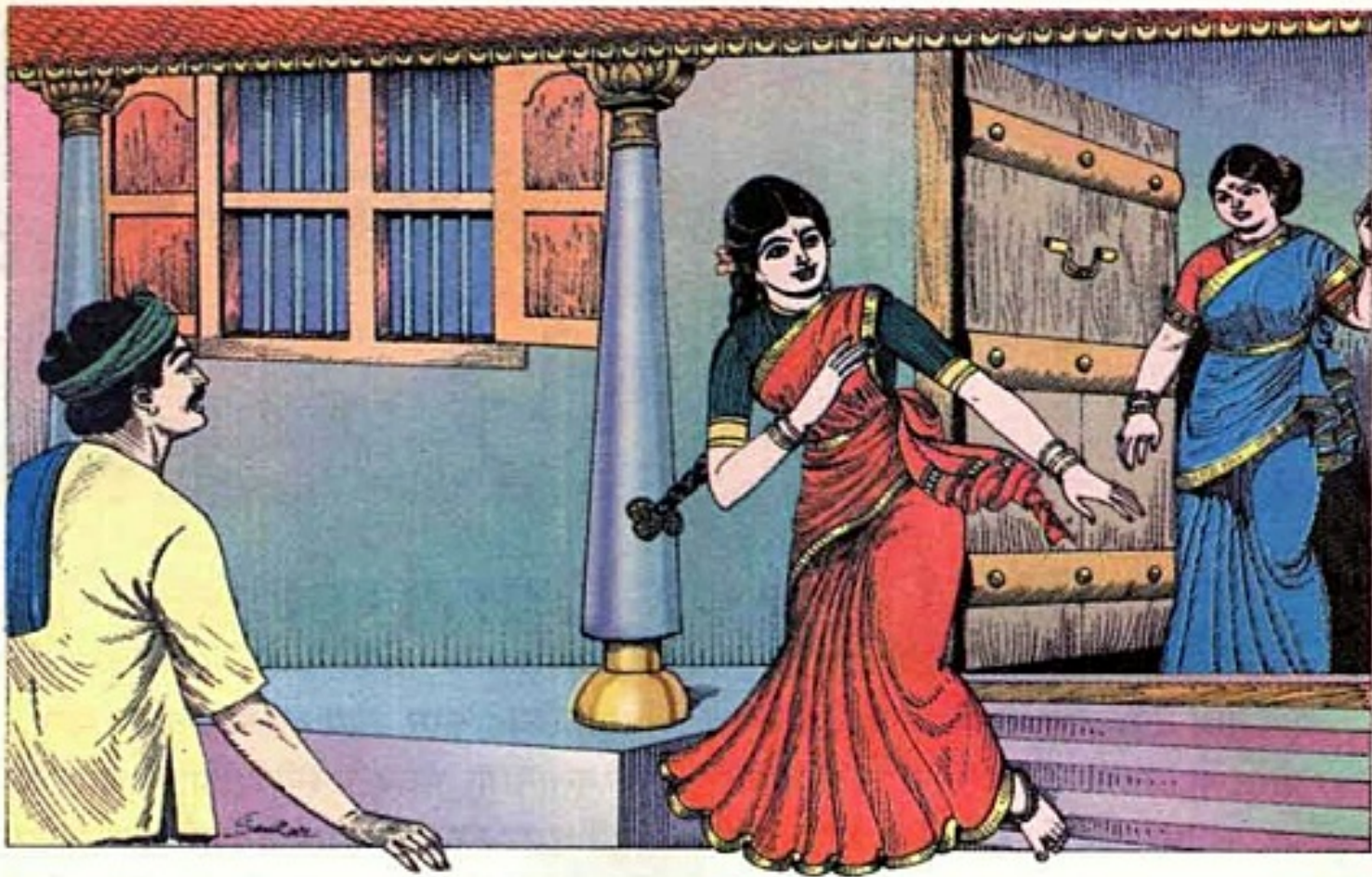
उसे समझा-बुझाकर घर ले जाया करता था। अक्सर ऐसा हुआ करता था।

कमल ने कमला के घर आते ही कहा, ''कमला, तुम्हारी भाभी चाहती हैं कि तुम त्यौहार के चार दिन पहले ही वहाँ आ जाओ। इसीलिए मैं आया हूँ। देर मत करना, अपनी सास से बताकर अभी चल पड़ो।''

कमला को इसकी उम्मीद नहीं थी, क्योंकि वह अपनी भाभी के स्वभाव के बारे में भली-भांति जानती थी। पर भाई की इस बात पर वह बेहद खुश हुई। उसने सास से यह बात बतायी और भाई के साथ चल पड़ी।

थोड़ी दूर जाने के बाद कमल ने कमला से कहा, ''तुम सीधे हमारे घर चली जाना। बाज़ार से कुछ सामान खरीदना है मुझे। काम से निपटकर जल्दी ही घर पहुँच जाऊँगा।''

कमला ने ''ठीक है'' के भाव में सिर हिलाया और अपने भाई के घर की ओर चल पड़ी। इसमें कमल की एक चाल थी। उसने सोचा कि अपनी ननद कमला के सामने चूना पोतने से सुंदरी झिझकेगी, शर्म महसूस करेगी। तब वह मज़दूरों को बुलवाकर उनसे चूना पुतवायेगी। इससे उस काम से वह खुद भी बच सकता है।

सुंदरी को मालूम हो गया कि उसका पति निसेनी ले आने पड़ोसिन गौरी के यहाँ नहीं गया। इसलिए वह खुद वहाँ से निसेनी ले आयी। वह सोचने लगी कि ये कहाँ गये होंगे। वह खुद दीवारों पर चूना पोतने लगी।

इतने में कमला वहाँ आ गयी और कहने लगी, "भाभी, भैया कह रहे थे कि तुम चाहती हो कि मैं तीन-चार दिन पहले ही यहाँ आ जाऊँ और यहीं त्यौहार मनाऊँ। भैया सामान खरीदने बाज़ार गये हैं।"

कमला की बातें सुनकर सुंदरी को अपने पति की चाल समझ में आ गयी। वह नाराज़ तो हुई पर कमला से उसने हँसते हुए कहा, "अच्छा हुआ, सही समय पर आ गयी हो। घर के साथ-साथ तुम पर भी चूना पोतकर ससुराल भेजूँगी, क्योंकि तुम्हारी सास हमेशा तुझे काली-कलूटी कहती रहती है। तुम्हें देखकर अब अपना मुँह बंद कर लेगी।"

भाभी की बातों पर कमला नाराज़ होकर बोली, "यह क्या कह रही हो तुम? पहले ही आकर मैंने बड़ी भूल की।" कहती हुई वह तेज़ी से पलटकर अपने घर की ओर चल पड़ी।

सुंदरी ने उसकी बातों की कोई परवाह नहीं की। वह चूना पोतने के काम में व्यस्त हो गयी।

कमल ने दूर से देखा कि कमला चिढ़ती हुई, अपने आप बडबड़ाती ससुराल की तरफ़ तेज़ी से बढ़ी चली जा रही है। घर आकर उसने पूछा, "कमला नाराज़ दिखती है। क्या तुमने कुछ कह दिया?"

नाराज़ी का नाटक करती हुई सुंदरी ने कहा, "भाभी और ननद के बीच में बहुत बातें होती रहती हैं। तुम्हारी बहन तो एकदम तुनक मिजाज है ही। रूठकर मायके और ससुराल में उसका आना-जाना कोई नई बात तो है नहीं। यह तो उसकी आदत हो गयी है। बाद में उसके पास चले जाना और उसे ठंडा कर देना। पर अभी तो निसेनी पर चढ़ जाओ और चूना पोतो।" कड़े स्वर में उसने कहा।

कमल को यह जानने में देर नहीं लगी कि उसकी चाल नहीं चली। पर बेचारा करे भी क्या? चूने का डिब्बा लेकर निसेनी पर चढ़ गया।

चंदामामा प्रस्तुति
अपराजेय गरुड़
चित्र : पाणि
अपने पूर्वजों की भाँति आदित्य गरुड की प्रतिमा की पूजा करता है। एक तेज रोशनी से कमरा भर जाता है। वह अपने में कुछ शारीरिक परिवर्तन महसूस करता है। वह राजा को अपहरण होने से बचाता है, उसे सुरक्षित स्थान में रखता है। कमान्डर नरेन्द्रदेव का बेटा रवीन्द्र देव राजा और प्रधान मंत्री दोनों के गायब हो जाने की स्थिति का लाभ उठाकर प्रभारी सरकार का प्रधान बन जाता है।

नरेन्द्रदेव भीड में आदित्य को पहचान जाता है।
उसने ऐसा तो नहीं सोचा कि उसे कोई नहीं पहचानेगा?
कौन मेरे पिता? आदित्य?
और कौन? उनका स्वागत करने चलते हैं?

पुन: स्वागत ! हम सब डर गये थे कि आप किसी भारी मुसीबत में पड गये होंगे। वह बेश क्यों?
कुछ मुसीबत आ सकती थी, लेकिन टल गई। इसी बेश के कारण।

हमारे प्रिय प्रधान मंत्री की जय हो !
आदित्य जी की जय !

रवीन्द्रदेव बिल्कुल प्रसन्न नहीं दिखाई देते !
कहाँ गायब हो गये थे आदित्य? प्रधानमंत्री होने के नाते आपको प्रजा को यह बताना होगा।

बिना उत्तर दिये आदित्य भीड़ की ओर मुड़ता है।
राजा का अपहरण हो गया है। उनका जीवन खतरे में पड़ सकता है।
मेरी बात सुनो। हमारे राजा सुरक्षित हैं। एक संभावित संकट को टालने के लिए उन्हें महल छोड़ना पड़ा। वे शीघ्र ही वापस आयेंगे। अधिक कुछ नहीं कह सकता। धैर्य रखें।
तुम झूठे हो। तुमने गरुड़ से मिलकर राजा का अपहरण किया है। तुम उनकी हत्या भी कर सकते हो।
आदित्य ने देखा कुछ पहरेदार उसकी ओर बढ़ रहे हैं।
पहरेदारो! इसे बन्दी बना लो। यह इसी लायक है।
नरेन्द्रदेव को मध्यस्थता करते देख रवीन्द्रदेव को आश्चर्य होता है।
आदित्य, तुम अपने निवास पर लौट जाओ। मैं राजा के लिए चिन्तित हूँ।
धन्यवाद! राजा पूर्ण सुरक्षित हैं और वे महल में शीघ्र ही लौट आयेंगे।
उनकी कोई चाल होगी। अन्यथा मुझे वे इतनी जल्दी क्यों छोड़ते?

घटनाचक्र बदलते देख लोग हैरान हैं।

क्या ये प्रधानमंत्री को बन्दी बनाने का साहस करेंगे?

विश्वास करो मेरे मित्र! ये बाप-बेटे कुछ भी कर सकते हैं।

सेना भीड़ को पीछे धकेलती है।

हमारे प्रधान मंत्री को कोई खतरा नहीं है।

महल में लौटकर कमान्डर अपने विश्वासी अधिकारियों को बुलाता है।

देखो, प्रधान मंत्री बाहर न जाने पायें। उनसे मिलनेवालों पर नज़र रखो।

जी हुज़ूर! हम उन्हें घर से बाहर नहीं निकलने देंगे।

महल में नरेन्द्रदेव और रवीन्द्रदेव ध्यानपूर्वक देववाणी सुनते हैं।

आह! मैं राजा को देख सकता हूँ। वे काफी प्रसन्न दिखाई देते हैं। उनके साथ दो व्यक्ति हैं.....

...एक पुरुष और एक नारी। अरे! यह स्थान तो सब तरह के जंगली जानवरों से भरा पड़ा है। क्या वहाँ जलप्रपात है? कुछ स्पष्ट दिखाई नहीं देता।

चित्र कैप्शन प्रतियोगिता

**क्या तुम कुछ शब्दों में ऐसा चित्र परिचय बना सकते हो,
जो एक दूसरे से संबंधित चित्रों के अनुकूल हो?**

चित्र परिचय प्रतियोगिता, चन्दामामा,
प्लाट नं. ८२ (पु.न. ९२), डिफेन्स आफिसर्स कालोनी, इकाडुथांगल, चेन्नई -६०० ०९७.

जो हमारे पास इस माह की २० तारीख तक पहुँच जाए । सर्वश्रेष्ठ चित्र परिचय पर १००/-रुपये का पुरस्कार दिया जाएगा, जिसका प्रकाशन अगले अंक के बाद के अंक में किया जाएगा ।

बधाइयाँ

अक्तूबर अंक के पुरस्कार विजेता हैं :

शिव भगत राम
हरिजन विद्यालय, सदर बाजार,
बैरकपुर, उत्तर २४ परगना, पिन - ७४३ १०१
पश्चिम बंगाल.

विजयी प्रविष्टी

"बंशी बजाओ बंशी-बजैया।
नाचो राधा ताता-थैया ॥"

चंदामामा वार्षिक शुल्क

भारत में १२०/- रुपये डाक द्वारा
Payment in favour of CHANDAMAMA INDIA LIMITED
No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097

Printed and Published by B. Viswanatha Reddi at B.N.K. Press Pvt. Ltd., Chennai - 600 026 on behalf of Chandamama India Limited, No. 82, Defence Officers Colony, Ekkatuthangal, Chennai - 600 097. Editor : Viswam

CHANDAMAMA

will bring you

- Brainrackers from your favourite Vetala
- Magical mythology
- Mindteasing contests to test and tease your skills
- Ribtickling humour to tickle your funny bones
- Fascinating feast of fables and fantasies
- Indiascope, which brings you the richness of Indian heritage
- Heritage puzzles and activity, special issues to mark occasions and lots more.....

Now you know why you *must* subscribe to Chandamama